RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जून 2021

बाल विज्ञान पत्रिका, जून 2021

चकमक

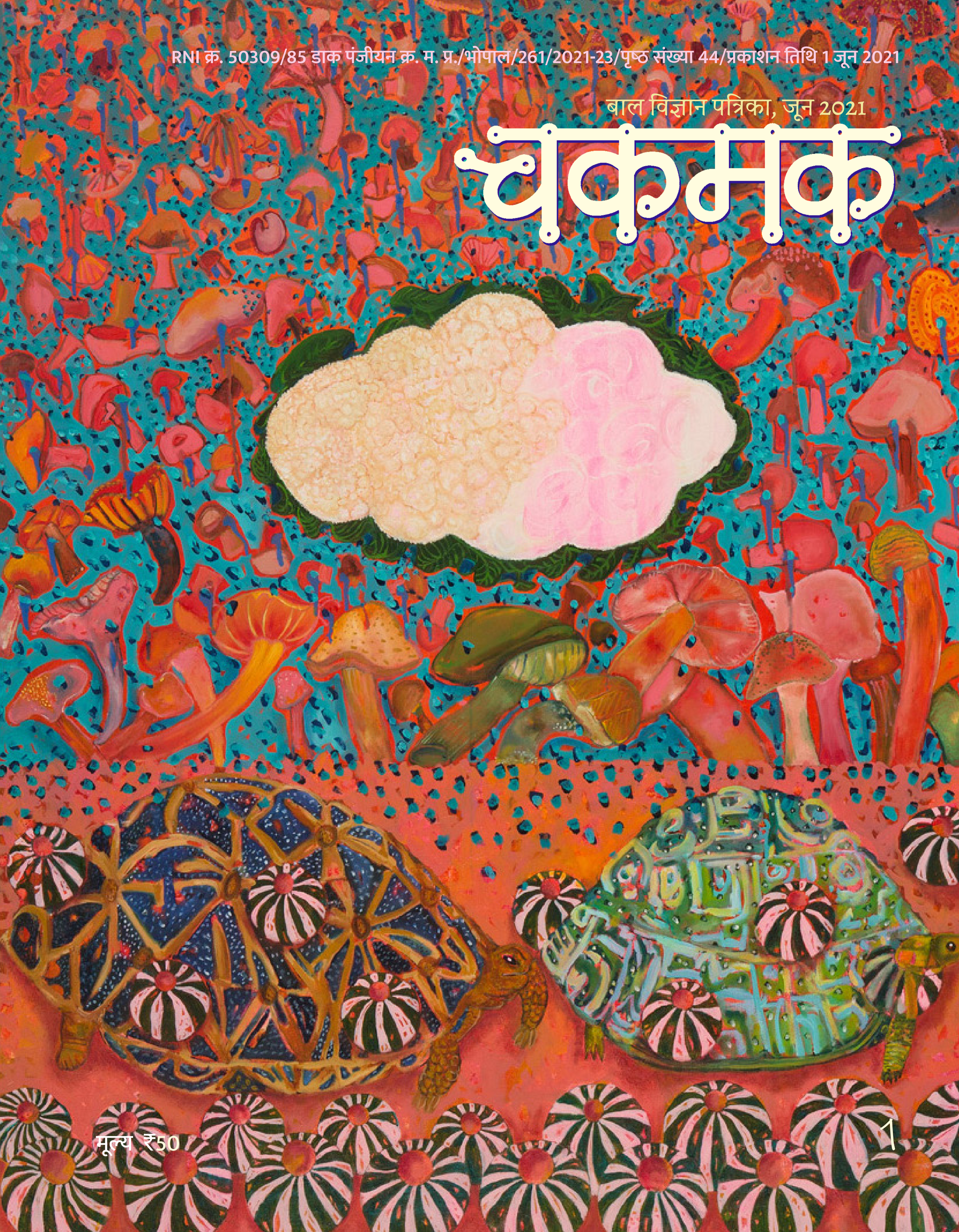

मूल्य ₹50

गर्मी से बचने के कुछ जंगली नुस्खे

रोहन चक्रवर्ती

चाट-चाटकर अपनी बाँहें गीली कर लो

- लाल कंगारू

स्पा का मज़ा लो... कीचड़ में लोट लगा लो

- जंगली भैंसा

झबरीली पूँछ बढ़ा लो और टोपी की तरह इस्तेमाल करो

- केप ग्राउंड गिलहरी

अपनी छाती को पानी में भिगो दो और नमी सोख लो

- पेंटेड सैंडग्राउस

सनस्क्रीन को मारो गोली, मिट्टी पोत लो और यूवी किरणों से बचो

- ऐशियाई हाथी

अपने आप को दफ़ना दो

- अन्धा ब्राह्मिणी साँप

कानों से अधिक गर्मी बिखेर दो

- फेनेक लोमड़ी

अंक 417 ● जून 2021

चकमक

गर्मी भर
सुसु रोककर रखो
- डोर्केस बारहसिंघा

टाँगों पर सुसू कर डालो।
- सफेद-पीठ गिद्ध

मई अंक की 'पत्तियाँ ही पत्तियाँ' गतिविधि के लिए बच्चों के साथ-साथ कुछ बड़ों के भी जवाब मिले।
स्पर्श त्रिपाठी, भोजक जील गिरिराज भाई, द्युति के अलावा 25 मई तक जिन भी बच्चों के जवाब मिले, उन सभी को चकमक की ओर से एक किताब बतौर इनाम दी जाएगी।

इस बार

गर्मी से बचने के कुछ जंगली नुस्खे - रोहन चक्रवर्ती - 2
सूना हुआ स्कूल - प्राची - 4
भूलभुलैया - 5
खुद से बातें... सामान्य बात - 6
गुण्डी में मुण्डी - नेहा पटेल - 7
क्यों-क्यों - 10
तुम भी जानो - 14
माथापच्ची - 15
तेज़ हवाओं की कहानी - सुशील शुक्ल - 16
जुगलबन्दी - चन्दन यादव - 19
एक फूल झाड़ने वाले की गाथा - सी एन सुब्रह्मण्यम् - 20
ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन - 22
तालाबन्दी में बचपन - लॉकडाउन डायरी 2020 - प्रार्थना - 24
अन्तर ढूँढ़ो - 27
चॉकलेट के स्वाद की अन्दर की बात - 28
बड़ों का बचपन - अलिफ बे पे - अरविन्द गुप्ता - 30
मेरा पन्ना - 32
कहानी लिखो - जवाब - 38
चित्रपहेली - 40
मेरा पन्ना - 43
आग लगी है पानी में - प्रभात - 44

आवरण चित्र: निराली लाल

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

सूना हुआ स्कूल

प्राची, आठवीं, दिगन्तर स्कूल, भावगढ़, राजस्थान

चित्र: अमृता

कोरोना के चलते जब हुआ लॉकडाउन फुल
सूने हुए गली-चौबारे, सूना हुआ स्कूल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल।

दरवाज़ों पे ताले जड़े हैं, सारे बच्चे घर में पड़े हैं
तरस गए हैं आने को हम, अपने ही स्कूल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल।

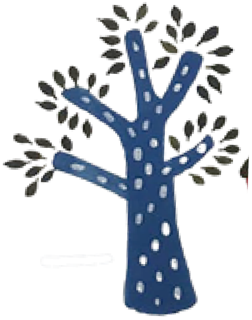

सारे समूह अब खाली होगें, दीवारों पे जाले होंगे
खोलो कमरा झाड़ू लगा दें, सब कमरे जाएँ धुल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल

कम्प्यूटर की याद है आती, आर्ट क्लास जो हमको भाती
हर वो पल जो हमने वहाँ बिताए, कैसे जाएँ उनको भूल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल।

बड़े-छोटे का भेद नहीं था, ना जात-पात से मतलब था
परिवार के जैसे शिक्षक हमारे, गए थे हमसे घुल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल।

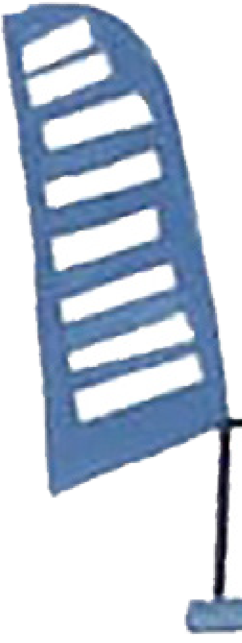

पेड़ों पे बेर ही बेर लगे हैं, मैदानों में झूले डले हैं
सब कुछ है मौजूद, मगर बच्चे सारे गुल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल।

संकट ये कैसा आया कि विद्यालय से दूर हुए
दुआ यही करते हैं कि, सब फिर से जाए खुल
सूना हुआ स्कूल हमारा, सूना हुआ स्कूल।

खुद से बातें... सामान्य बात

कई बार हम खुद से बातें करते हैं – या तो मन ही मन में या फिर बोलकर। कुछ लोग ऐसा नियमित रूप से करते हैं। और कुछ लोगों को ऐसा करके काफी अच्छा महसूस होता है। लेकिन क्या खुद से बात करना (सेल्फ-टॉक) सामान्य है?

सेल्फ-टॉक का काफी अध्ययन हुआ है। कई लोग इसे एक मानसिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में देखते हैं। लेकिन मनोवैज्ञानिक इसे सामान्य और कुछ परिस्थितियों में फायदेमन्द भी मानते हैं।

इस व्यवहार के व्यवस्थित अध्ययन की शुरुआत 1880 के दशक में हुई थी। वैज्ञानिकों की विशेष दिलचस्पी यह जानने में थी कि लोग खुद से क्या बात करते हैं, क्यों और किस उद्देश्य से करते हैं। उनको लगा कि सेल्फ-टॉक को आन्तरिक मतों या धारणाओं की मौखिक अभिव्यक्ति कह सकते हैं।

बच्चे अक्सर ऐसा करते हैं, और यह उनके भाषा के विकास, किसी कार्य में सक्रियता और प्रदर्शन को सुधारने का एक तरीका है। यह माता-पिता के लिए चिन्ता का कारण नहीं होना चाहिए। और तो और, वयस्क अवस्था में भी यह व्यवहार कोई समस्या नहीं है। यह फायदेमन्द भी हो सकता है बशर्ते कि कोई व्यक्ति मतिभ्रम जैसी मानसिक समस्या का अनुभव न करने लगे।

किसी कार्य के दौरान सेल्फ-टॉक से उस काम में नियंत्रण, एकाग्रता (फोकस) और प्रदर्शन में सुधार होता है। साथ ही समस्या-समाधान के कौशल में भी बढ़ोतरी होती है। वर्ष 2012 में किए गए एक अध्ययन में देखा गया कि कैसे सेल्फ-टॉक किसी वस्तु की तलाश के कार्य को प्रभावित करती है। इस अध्ययन में पता चला कि जब हम किसी गुम हुई वस्तु या सुपर मार्केट में किसी विशेष उत्पाद की तलाश करते हैं तब सेल्फ-टॉक मददगार होती है। खेलकूद में भी सेल्फ-टॉक काफी फायदेमन्द साबित होती है। असल में सब कुछ इस बात पर भी निर्भर करता है सेल्फ-टॉक किस प्रकार की है – सकारात्मक, नकारात्मक या फिर तटस्थ।

सेल्फ-टॉक से लोगों को भावनाओं को नियमित और संसाधित करने में मदद मिलती है। जैसे कि क्रोध और घबराहट की स्थिति में सेल्फ-टॉक से भावनाओं को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। इसके अलावा 2014 में किए गए अध्ययन से पता चला है कि दुश्चिन्ता से ग्रस्त लोगों के लिए सेल्फ-टॉक काफी फायदेमन्द होती है। तनावपूर्ण घटनाओं के बाद सेल्फ-टॉक से चिन्ता में भी कमी होती है।

यदि सेल्फ-टॉक जीवन में खलल डालने लगे तो उसे कम करने के उपाय भी हैं। जैसे व्यक्ति सेल्फ-टॉक को एक डायरी में लिखने की आदत डाल ले तो इस आदत को नियंत्रित किया जा सकता है। वैसे स्वयं की आलोचना और नकारात्मक सेल्फ-टॉक से मानसिक स्वास्थ्य के प्रभावित होने की आशंका भी होती है। कभी-कभी सेल्फ-टॉक के साथ मतिभ्रम होना सिज़ोफ्रेनिया का सूचक होता है। ऐसी परिस्थितियों में मनोचिकित्सक से परामर्श करना बेहतर होगा। कुल मिलाकर, खुद से बात करना एक सामान्य व्यवहार है जो किसी मानसिक समस्या का लक्षण नहीं है।

(स्रोत फीचर्स)

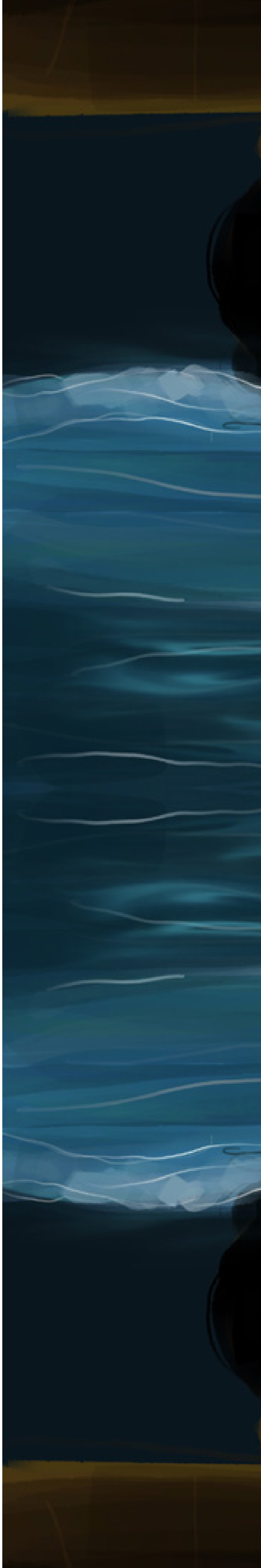

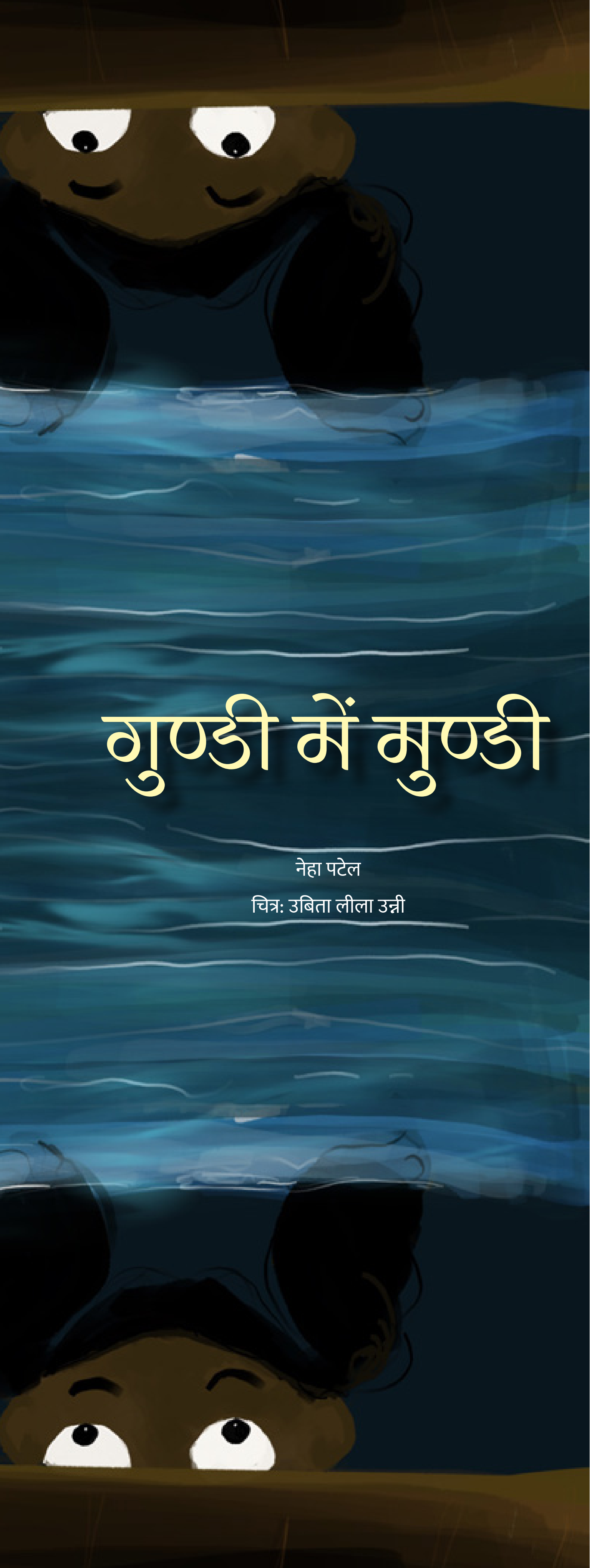

गुण्डी में मुण्डी

नेहा पटेल

चित्र: उबिता लीला उन्नी

एक रात की बात है। हम सब सो रहे थे। अचानक माँ ने मुझे और भाई को उठाया। माँ और पापा टेंशन में थे। “ये पानी कहाँ से आ रहा है?” माँ ने पापा से कहा। दोनों ने इधर-उधर नज़रें घुमाईं तो देखा कि ज़मीन के नीचे से पानी के बुलबुले निकल रहे थे। माँ ने कहा “उठो, उठो! हमारे घर में पानी भर गया है!” जब मैंने पलंग के नीचे झाँका तो देखा कि कमरा पानी से भरता जा रहा था। माँ और पापा सामान समेटने लगे। भाई पलंग से उतरकर दरवाज़े पर गया और गली की ओर झाँकने लगा। माँ ने ज़ोर-से चिल्लाया, “अरे! सामान समेट! दरवाज़े पर क्या खड़ा है?” हम सब सामान को जल्दी-जल्दी समेटने लगे। अलमारी और कूलर के नीचे पत्थरों को जमाकर ऊँचा करके रख दिया। और छोटे सामान को पलंग के ऊपर रखा। कुछ सामान जैसे कि पानी के टब, बाल्टी, बांगा बह गए।

माँ ने मुझे गोद में उठाया। फिर हम सब एक पड़ोसी के यहाँ चले गए। क्योंकि उनका घर गली के सारे घरों से ऊँचा था। हमारा घर मिट्टी का था और नाले से लगा हुआ था। इसी कारण नाले का पानी घर में और भी ज़्यादा भर गया था। यह देखकर बहुत खुशी हुई कि मेरे दोस्त भी वहीं थे।

टिनम भागकर मेरे पास आई और बोली, “अरे नेहा, तू भी आ गई? चल, हम दोनों खेलते हैं... रात भर सोएँगे ही नहीं!” और मैं उसके साथ खेलने लगी। माँ-पापा डर रहे थे कि कहीं हम पानी में न चले जाएँ। इसलिए उन्होंने हमें रात भर पकड़कर रखा।

देखते ही देखते दो-तीन घण्टे में सुबह भी हो गई। बारिश कम हो चुकी थी। हमने जाकर देखा तो घर में पानी कम हो चुका था। पर बस्ती के चारों तरफ पानी ही पानी नज़र आ रहा था।

हम घर पर ही थे। तभी बाहर गली से कुछ लोगों के चिल्लाने की आवाज़ आई। मैं और भाई दौड़कर बाहर निकले तो देखा कि नाले की ओर से कुछ बहकर आ रहा था। जब वह थोड़ा पास आने लगा तो एक गुण्डी नज़र आई।

“ये लोग हँस क्यों रहे हैं?” मैंने भाई से पूछा।

जिन-जिन के घरों के सामने से वो बहती हुई आ रही थी, वहाँ के लोग उसे पकड़ने की कोशिश करते। पर तेज़ बहाव के कारण वो हाथ ही नहीं आती। पानी की लहर से वो इधर-उधर बही जा रही थी।

ये नज़ारा देखकर सब पागलों जैसे हँस रहे थे। जब वह और पास आई तो गुण्डी के पीछे एक पूँछ दिखाई दी। गौर-से देखने पर समझ आया कि वो तो एक कुत्ता था, जिसका सिर गुण्डी में फँस गया था। उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैं और भाई भी ये देखकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

सारे लोग उसे बड़े मज़े-से देख रहे थे। फिर कुत्ता बहते-बहते एक नल में जाकर अटक गया। वो नल हम सबके लिए बहुत मायने रखता था – वो गली के ठीक बीच में था और गली के सभी लोग उसी से पानी भरते थे। आज वो भी डूबा हुआ था। नल लोहे के लम्बे पाइप से बना हुआ था। गुण्डी में फँसे कुत्ते का सिर बार-बार उस पाइप से जा टकराता। बहुत बार यूँ ही टकराने के बाद आखिरकार कुत्ते के सिर से गुण्डी निकल गई।

जैसे ही गुण्डी से उसका सिर बाहर निकला, उसकी नज़र एक मछली बेचने वाले डोकरे पर पड़ी। और कुत्ता मछली के लालच में उसे काटने के लिए दौड़ा। हम बच्चे मछली वाले डोकरे को बचाने कुत्ते के पीछे भागे। कुत्ते ने पीछे मुड़कर देखा। हम सबको देखकर वो डरकर भाग गया। डोकरे ने खुश होकर हमें कुछ मछली दे दी। हमने आपस में बाँट ली। सोचा भूँजकर मज़े-से खाएँगे।

मैंने चुपके-से जाकर अपने हिस्से की आधी मछली कुत्ते को दे दी।

यह कहानी *बस्ती में बाढ़* किताब से ली गई है।

प्रकाशक: शहीद स्कूल

लेखक: माया यादव, नेहा पटेल, टिनम निषाद और पूजा सिंह

चित्र: उबिता लीला उन्नी

चार शिक्षकों की कलम से निकली यह किताब तीन कहानियों और एक लेख का संग्रह है। इन सभी शिक्षकों ने बचपन में शहीद स्कूल में ही पढ़ाई की है। इस किताब में लेखकों ने अपने बचपन में हुई बाढ़ को याद किया है। बाढ़ की विपदा में भी जहाँ बच्चे हँसी और सपने खोज लेते हैं, वहीं युवा मस्तिष्क इस पर तीखे सवाल खड़े करता है — क्यों बारिश में गरीब बस्तियों में पानी भर जाता है? क्यों कुछ लोगों के घर बह जाते हैं?

किताब ऑर्डर करने के लिए school.shaheed@gmail.com पर ईमेल करें या दिए गए नम्बर पर फोन करें:
+91 761-1192458, +91 761-0566328,
+91 8435442650

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

सोचो कि तुम ज़िन्दगी में कुछ भी बन सकते हो! किसी भी तरह की कोई बाधा नहीं है। तो तुम क्या बनना चाहोगे, और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है—

कुछ लोगों को कड़वा स्वाद (जैसे कि करेले, काली चाय, कॉफी, डार्क चॉकलेट आदि) क्यों पसन्द होता है?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो।
चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो।
हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

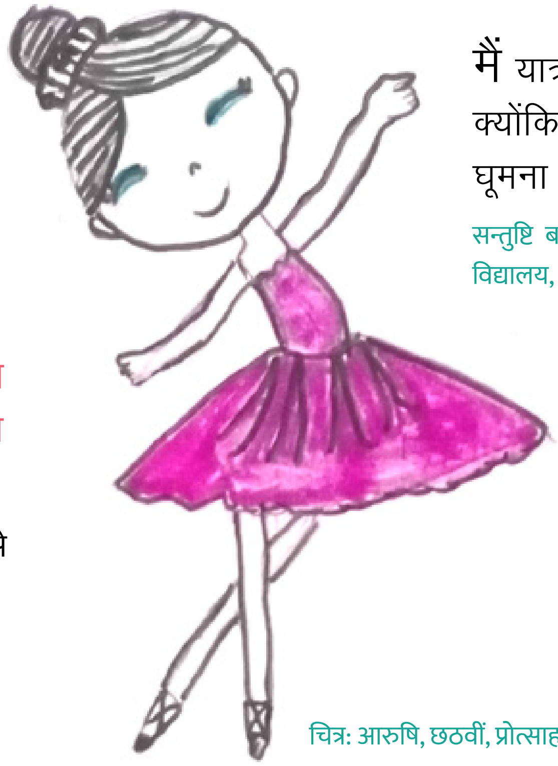

चित्र: आरुषि, छठवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मैं यात्री बनना चाहूँगी क्योंकि मैं पूरी दुनिया घूमना चाहती हूँ।

सन्तुष्टि बावस्कर, नौवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

कोई बाधा ना हो तो मैं डाँसर बनना चाहूँगी। मुझे डाँस करना बहुत अच्छा लगता है। मैं मोज़ ऐप पर अपने मामा के साथ वीडियो भी बनाती हूँ।

आरुषि, छठवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

तब तो मैं रेडियो बनना चाहूँगी। क्योंकि मुझे ना, बोलना बहुत पसन्द है। बातें करना पसन्द है। मम्मी तो कहती हैं, "जब देखो रेडियो की तरह चालू हो जाती है।" घर वाले मुझसे तंग आ जाते हैं। डाँटकर चुप करा देते हैं। पर जब रेडियो बन जाऊँगी ना, तो चौबीस घण्टे बोलूँगी। जिसे सुनना होगा वो मेरा कान ऐंठकर चालू कर लेगा। मैं बोलना शुरू कर दूँगी। और जो तंग आ जाएगा वो बन्द कर देगा। फिर मैं किसी दूसरे के पास चली जाऊँगी। उससे बातें करूँगी। वैसे भी दुनिया में बहुत-से लोग हैं, कोई न कोई तो मुझे सुनेगा ही।

निशा गुप्ता, किलकारी बिहार बाल भवन, सैदपुर, पटना, बिहार

मैं अपनी ज़िन्दगी में एक अदृश्य मानव बनना चाहूँगा। मैं एक पोशाक बनाऊँगा जिसे पहनकर मैं अदृश्य हो जाऊँगा। फिर गरीब लोगों की मदद करूँगा। चोरों को चोरी करने से रोकूँगा। बूढ़े लोगों को चलने में मदद करूँगा। पार्क में छोटे बच्चों को झूले से गिरने से बचाऊँगा। और लोगों को गलत काम करने से रोकूँगा।

इसाख अमान, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

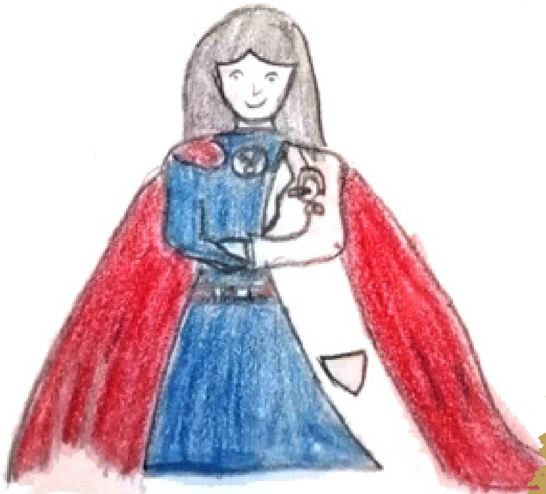

चित्र: रितु झा, पाँचवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मैं एक शेफ बनना चाहता हूँ। बचपन से ही मुझे तरह-तरह के खाने बहुत पसन्द हैं। मैं अपनी मम्मी और दीदी के साथ खाना बनाना सीखता हूँ। मैं एक शरबत भी बनाता हूँ।

नेवन कटारिया, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

अगर कुछ भी बन सकती हूँ तो मैं जानवरों के लिए कुछ करना चाहूँगी। मैं जानवरों को बचाना चाहूँगी। उन्हें सुरक्षित करना चाहूँगी। अवैध शिकार रोकना चाहूँगी। क्योंकि मुझे सभी जानवरों से बहुत प्यार है।

कियारा रेड्डी, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

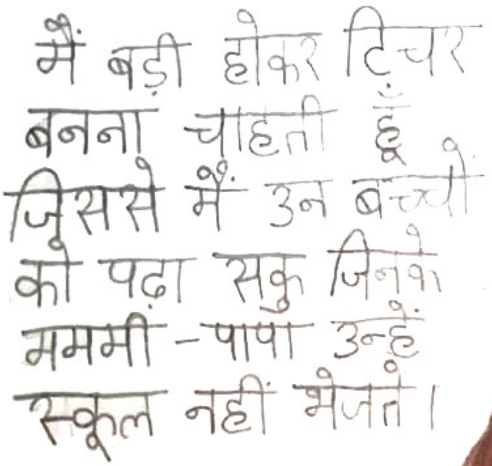

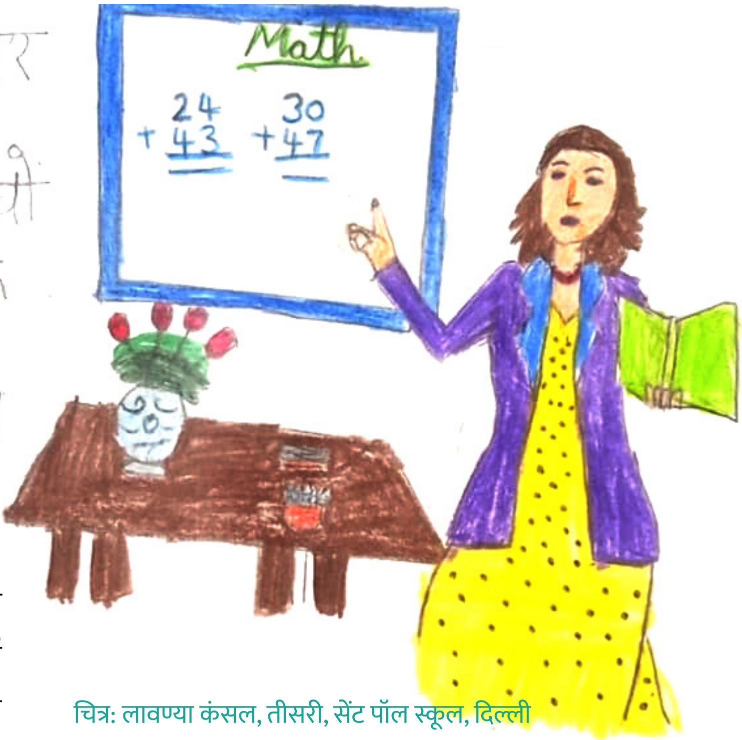

चित्र: लावण्या कंसल, तीसरी, सेंट पॉल स्कूल, दिल्ली

मैं बड़े होकर साइंटिस्ट बनना चाहता हूँ। और एक्सपरिमेंट करना चाहता हूँ। मैं एक कार बनाऊँगा जो एक रोबोट बन जाएगी। और सारे काम कर सकेगी।

सएेश गुप्ता, दूसरी, द हेरिटेज स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं एक इंटीरियर डेकोरेटर बनना चाहूँगी क्योंकि यह मेरा शौक है। और हम जिस चीज़ के शौकीन होते हैं वह हम पूरा मन लगाकर अच्छे-से करते हैं। और जो काम दिल से किया जाए स्वाभाविक ही है कि वह बेहतरीन ही होगा।

हर्षिता कौशले, दसवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

मेरे पापा मेरे लिए बहुत सारी किताबें लाते हैं। और मैंने बहुत मज़े-से सब पढ़ी हैं। उसमें से मेरी पसन्दीदा किताबें हैं– *मिमि, ज़िद्दी शन्नो, मैं तो बिल्ली हूँ, नंगू-नंगू नाच, चकमक, तीन अन्धे चूहे, काड़ो कोइली, अप्पूकुट्टन को कैसे तौलें, मन के लड्डू, न आसमान गिरा न चाँद बौखलाया, नाच* और *मोर डोंगरी*। इन किताबों को पढ़कर मैं अपनी भी कहानियाँ लिखती हूँ और चित्र बनाती हूँ। मेरे दोस्तों में कोई कहानी की किताबें नहीं पढ़ता है। इसलिए मैं चाहती हूँ कि सभी बच्चे कहानी की किताबें पढ़ें और मज़े के लिए पढ़ना सीखें। मेरे पापा भी हमेशा अपने स्कूल में किताबें लेकर जाते हैं। और बच्चों को कहानियाँ सुनाते हैं और पढ़ने को देते हैं। इससे बच्चे बहुत खुश होते हैं। इसलिए मैं लाइब्रेरियन बनना चाहती हूँ। जिससे मैं बच्चों तक खूब सारी किताबें पहुँचा सकूँ।

द्युति, दूसरी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: द्युति, दूसरी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: साधना, पाँचवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

मैं बड़े होकर एक वकील बनना चाहती हूँ। मुझे वकील इसलिए बनना है क्योंकि मेरी माँ भी एक वकील हैं। और मुझे कोर्ट जाना भी पसन्द है।

आरना रेवारी, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

मैं कार्डियोथोरेसिक सर्जन बनना चाहूँगी। क्योंकि यह मेरा सपना है कि मैं एक डॉक्टर बनूँ जिससे पूरी दुनिया मुझे जाने। मुझे मेरी पढ़ाई और मेहनत पर पूरा भरोसा है कि मुझे सफलता प्राप्त होकर ही रहेगी, चाहे जितना भी कोरोना या लॉकडाउन रहे। मैं डॉक्टर बनकर उन लोगों का इलाज करूँगी जिन्हें इसकी सख्त ज़रूरत है। मैं खुद का एक हॉस्पिटल भी बनाऊँगी। यह मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा और खूबसूरत सपना है।

वैभवी रामरायका, चौदह वर्ष, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे घर में सभी लोग अधिक से अधिक आईएएस या पीसीएस बनना चाहते हैं। पर मैं एक लेखिका बनना चाहती हूँ। वैसे पहले तो मैं डीएम या बीएसए कुछ बनना चाहती थी। पर उसमें मेरा मन नहीं लगा। क्योंकि अगर मैं डीएम या बीएसए कुछ भी बन जाती हूँ तो पूरे ज़िले को सँभालना पड़ेगा। और एक मीटिंग से दूसरी, फिर तीसरी ऐसा करने में ही दिन निकल जाएगा। फिर मैं अपने मन का कुछ कैसे कर पाऊँगी। इसलिए मैं लेखिका बनना चाहती हूँ। जिससे मैं पूरे दिन में क्या किया इसे कहानी में बदलकर लिख पाऊँगी।

गौरी मिश्रा, चौथी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

तुम भी जानो

ऊँट ले आता है किताबें

बलूचिस्तान के गाँवों के बच्चों को एक ऊँट के आने का बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार रहता है। रोशन नाम का यह ऊँट हर हफ्ते इन बच्चों के लिए ढेर सारी किताबें लेकर आता है। इसे तुम 'ऊँट लाइब्रेरी' भी कह सकते हो। जिन गाँवों में इंटरनेट नहीं हैं, वहाँ लॉकडाउन के दौरान बच्चों की पढ़ाई न रुके इसलिए यह कैमल लाइब्रेरी प्रोजेक्ट एक हाई स्कूल की प्रिंसिपल रहिमा जलाल ने शुरू किया था। इसके चलते पाकिस्तान के दूर दराज़ के गाँवों के बच्चों को भी किताबें पढ़ने को मिल जाती हैं।

ड्रेकुला के महल में लगती है वैक्सीन

रोमानिया के एक शहर ब्रोशाव में 'ब्रेन कासिल' नाम का एक महल है। कहा जाता है कि ब्रेम स्टोकर के उपन्यास *ड्रेकुला* का मुख्य पात्र 'ड्रेकुला' यहीं रहता था। यह भी माना जाता है कि ड्रेकुला खून के प्यासे होते थे। अब ब्रेन कासिल एक मशहूर टूरिस्ट स्पॉट बन चुका है। हाल ही में इस महल में कोविड-19 (कोरोना) की वैक्सीन लगानी शुरू की गई है। यहाँ पर नर्स और डॉक्टर बड़े-बड़े दाँतों वाले स्टिकर्स लगाकर लोगों को वैक्सीन लगा रहे हैं। रोमानिया सरकार की कोशिश है कि ऐसे मज़ेदार तरीके से वैक्सीन लगवाने ज़्यादा लोग पहुँच जाएँगे ।

माथापच्ची

1. यदि एक कागज़ को चित्र में दिखाए गए तरीके से मोड़कर पंच करें, तो खोलने पर कागज़ नीचे दिए गए चार चित्रों में से किसके जैसा दिखेगा?

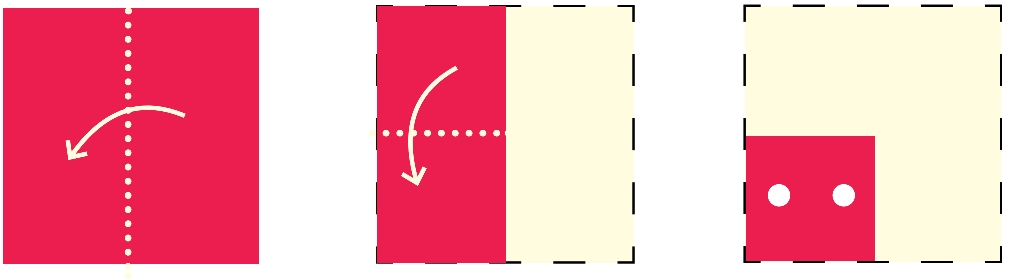

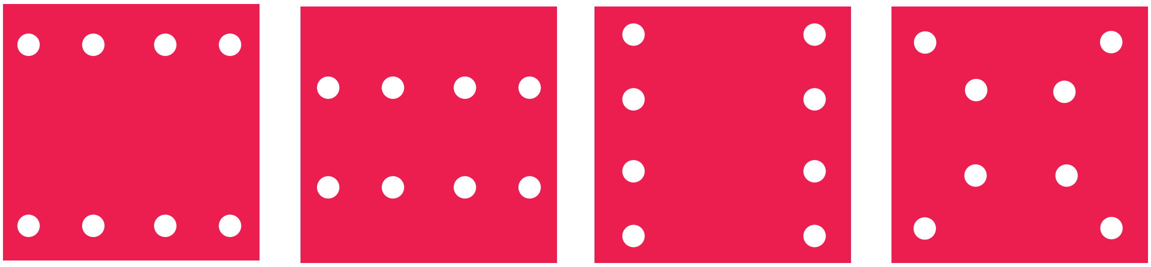

2. दिए गए चित्र को चार भागों में इस तरह बाँटो कि चारों भागों की आकृति व माप समान हो। और उनमें गोलों की संख्या भी समान हो। चाहो तो तुम चारों भागों को अलग-अलग रंग भी कर सकते हो।

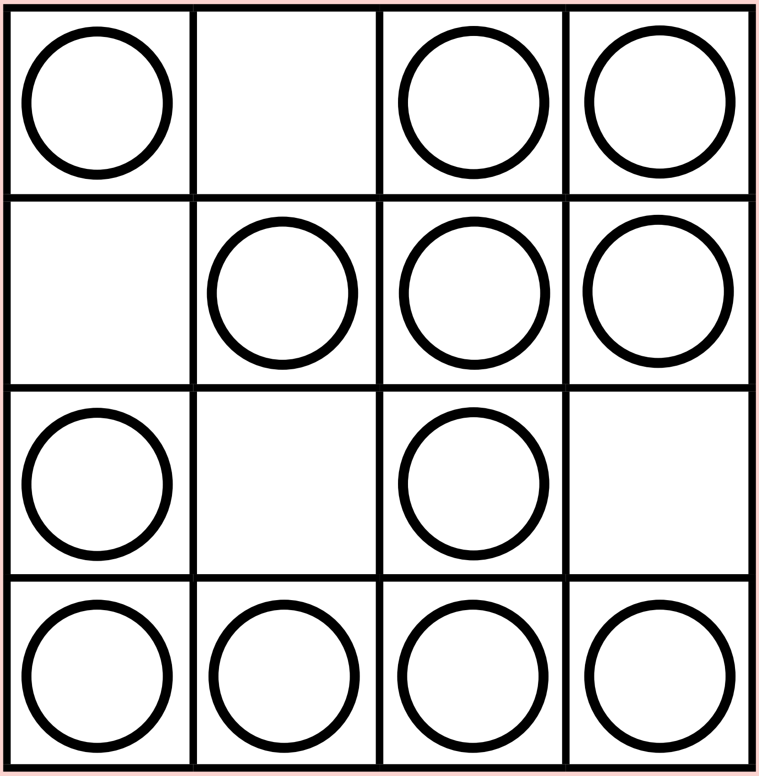

3. एलेक्स, नैना और सैफ में से किसी एक से लैपटॉप टूट गया। पूछने पर तीनों ने यह जवाब दिया:

एलेक्स: नैना सच बोल रही है।

नैना: एलेक्स ने नहीं तोड़ा।

सैफ: एलेक्स ने तोड़ा है।

यदि तीनों में से केवल एक सच बोल रहा हो, तो बताओ कि लैपटॉप किसने तोड़ा?

पेज 37 पर जारी...

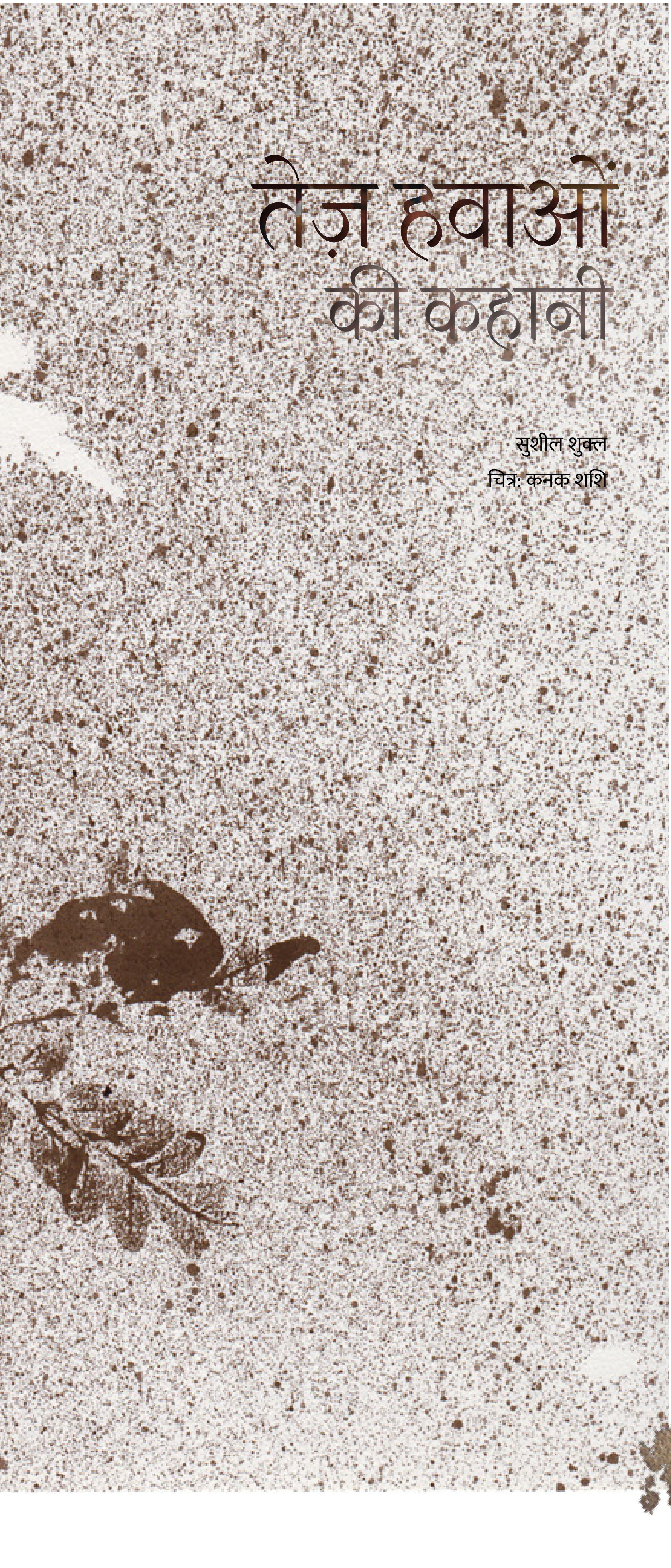

तेज़ हवाओं की कहानी

सुशील शुक्ल

चित्र: कनक शशि

कुछ तेज़ हवाएँ थीं। उनका एक गाँव था। वह गाँव उड़ता रहता था। उड़ते गाँव में तेज़ हवाएँ उड़ते-उड़ते रहती थीं। दिन भर उड़ते-उड़ते वे थक जाती थीं। शाम को वे सोने जातीं। मगर उनकी नींद उड़ जाती। नींद उड़ती तो नींद के सपने उड़ जाते। कोई सपना किसी पेड़ पर जाकर अटक जाता। वहाँ वह उस पेड़ की नींद में चला जाता।

आम का पेड़ हवा के सपने देखता रहता। हवा उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आम के पेड़ के पास पहुँचती। आम के पेड़ की नींद में उसे अपना सपना दिख जाता। वह उसे झिंझोड़ती। आम की एक पत्ती जागती तो बाकी पत्तियाँ सपना देखती रहतीं। एक-एक कर सारी पत्तियों की नींद टूटती। तब जाकर आम की आँख खुलती। हवा आम से अपना सपना माँगती। मगर सपना तो आम की नींद में था। आम कहता कि तुम मुझसे नींद में ही पूछतीं तो मैं सपना दे सकता। यह कहकर आम नींद में चला जाता। और हवा का सपना देखने लगता। थोड़ी देर बाद हवा उससे सपना माँगती। उसकी आवाज़ सुनकर आम की नींद खुल जाती। और इस तरह हवा का सपना आम के पास ही रह जाता।

हवा फिर दूसरे सपने की तलाश में किसी नदी को जाती। ...उड़ती हवाएँ उड़ते गाँव में रहती हैं। उनकी नींदें उड़ती रहती हैं। उनके सपने उड़ते रहते हैं। और वे उन्हें ढूँढ़ने हर जगह उड़ती रहती हैं। जिससे पूछती हैं वो जाग जाता है। और सपना उसकी नींद में रहा आता है। क्या तुम्हारी नींदों में कभी उड़ती हवाओं का कोई सपना आया है?...

कविता कार्ड

पढ़ो और फिर चाहो तो अपने दोस्त को इसी कार्ड के दूसरी तरफ एक चिट्ठी लिखकर भेज दो।

कविता कार्ड के चार गुच्छे।
एक गुच्छे में बारह कविताएँ।

जंगल जंगल बात चली है

जंगल जंगल बात चली है
पता चला है
चड्डी पहन के फूल खिला है
फूल खिला है

एक परिन्दा है शर्मिंदा
था वो नंगा
इससे तो अण्डे के अन्दर
था वो चंगा

सोच रहा है बाहर आखिर
क्यों निकला है
चड्डी पहन के फूल खिला है
फूल खिला है

- गुलज़ार

चित्र: चन्द्रमोहन कुलकर्णी

इन्हें मँगाने के लिए तुम चकमक के पते पर लिख सकते हो। या हमें फोन कर सकते हो। या चाहो तो सीधे ऑनलाइन मँगा लो। http://www.eklavya.in/pitara/chakmak_kavita_cards

जुगलबन्दी

चन्दन यादव
चित्र: कनक शशि

किसान के पास एक घोड़ा था। एक दिन वह घर से भागकर जंगल पहुँच गया। हरियाली का समय था। उसने भरपेट घास खाई।

शाम को सियार बोलने लगे। उनकी आवाज़ सुनकर वह ज़ोर-से हिनहिनाया। हिनहिनाहट सुनकर सियार चुप हो गए। कुछ देर की चुप्पी के बाद सियार फिर बोलने लगे। सुनकर घोड़ा भी ज़ोर-से हिनहिनाया। सियार फिर चुप हो गए। घोड़े को यह मज़ेदार लगा। सियार बोलते। फिर घोड़ा हिनहिनाता। फिर सियार बोलते। फिर घोड़ा हिनहिनाता।

उस शाम देर तक यह खेल चलता रहा। और तभी बन्द हुआ जब हिनहिनाने की आवाज़ का पीछा करता किसान अपने घोड़े के पास पहुँच गया।

इतिहास के स्रोतों से...

एक फूल झाड़ने वाले की गाथा

सी एन सुब्रह्मण्यम्
चित्र: कनक शशि

रोज़ सुबह मुझे अपने घर के सामने की सड़कों को झाड़ने की आवाज़ आती है। भोर होने से पहले अँधेरे में ही ये काम हो जाता है। जब उजाला होता है तो सड़कें साफ मिलती हैं। वे कौन लोग हैं जो यह काम करते हैं, उन्हें क्या लगता है, उन पर क्या बीतती है...

दूर से आती एक आवाज़...

फिर एक दिन बहुत शान्त स्वर में, बहुत प्रेम के साथ उनमें से कोई मुझे आवाज़ देता है। मुझे अपनी कहानी सुनाता है। ये सुनीत की आवाज़ है। सुनीत भगवान बुद्ध के उन शुरुआती शिष्यों में से एक थे जो अपने आपको 'पुप्प छड्डक' यानी कि 'फूल झाड़ने वाला' कहते हैं। बौद्ध साहित्य में ऐसे महत्वपूर्ण शिष्यों को 'थेर' या बुज़ुर्ग कहा गया है और उनकी गाथाओं के संकलन को 'थेरगाथा' कहा गया है। सुनीत की आवाज़ ढाई हज़ार सालों के फासले को पार करते हुए एक थेरगाथा के ज़रिए मुझ तक पहुँचती है...

"नीचे कुलम्हि जातोहं दलिद्दो अप्पभोजनो,
हीनं कम्मं ममं असि अहोसिं पुप्फछड्डको।"

"मैं एक नीच कुल में पैदा हुआ, गरीब और बहुत कम भोजन करने वाला था, मेरा काम हीन था और मैं सूखे फूल झाड़ता था।"

"जिगुच्छितो मनुस्सानां परिभूतो च वम्भितो,
नीचं मनं करित्वान वन्दिस्सं बहुकं जनं।"

"मैं मनुष्यों के जुगुप्सा का पात्र और तिरस्कृत, उनके धिक्कार सुनकर, अपने मन को नीचा करके बहुतों को प्रणाम करता था।"

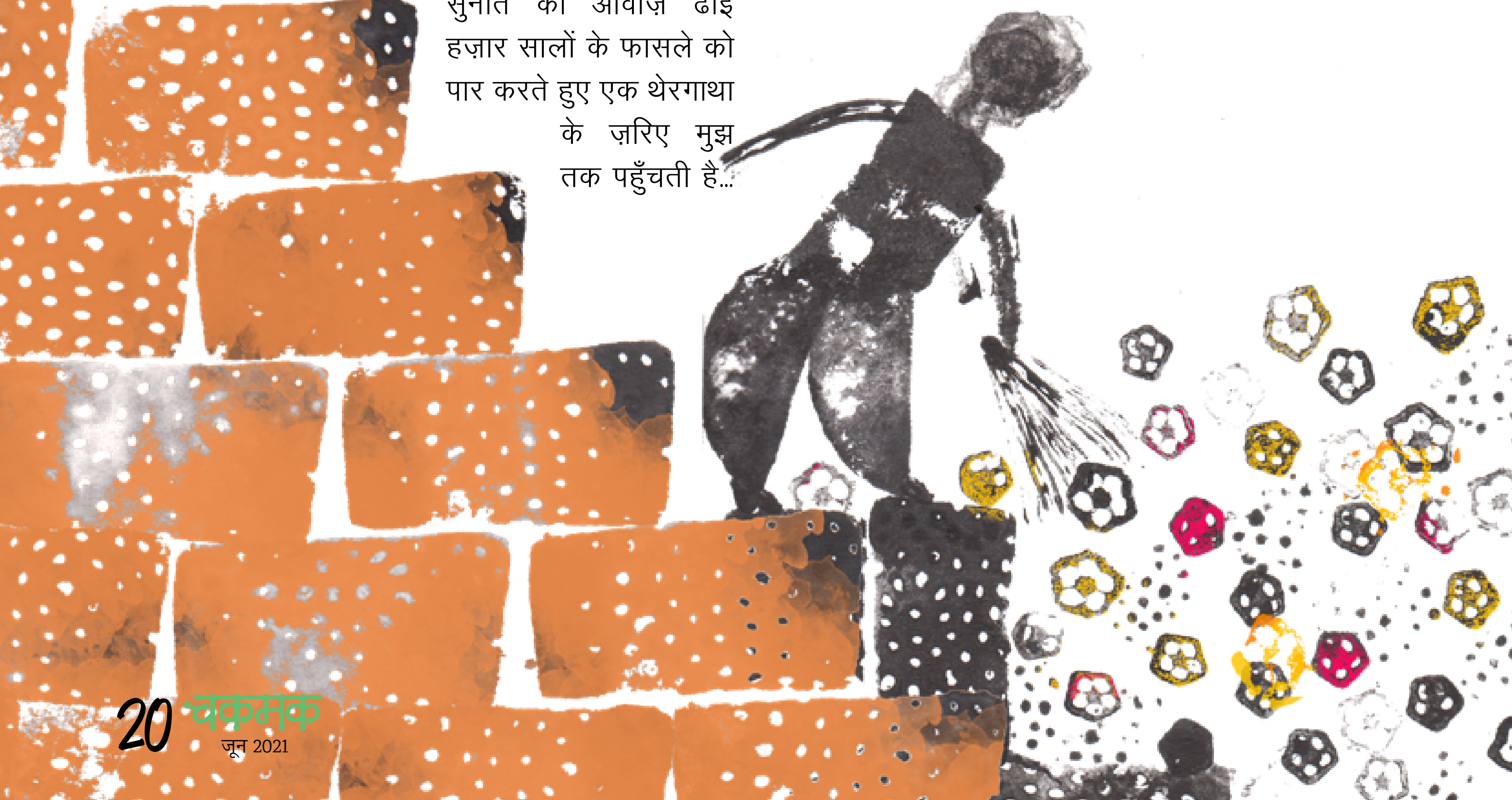

सुनीत की मुक्ति

सुनीत एक ऐसी जाति में पैदा हुए थे जिसे लोग नीच और छूने योग्य भी नहीं मानते हैं। गरीबी, भुखमरी, लोगों की हेय नज़रों, तिरस्कार और गाली-गलौच के बावजूद भी सुनीत मन मारकर उन्हीं को प्रणाम करने पर मजबूर थे। ऐसा जीवन बिताने वाले सुनीत को एक सुबह बुद्ध दिख जाते हैं। सुनीत अपना झाड़ू वाला डण्डा नीचे रखकर बुद्ध को प्रणाम करते हैं। और बुद्ध वहीं खड़े होकर दया भाव से उन्हें देखते हैं। ऐसा शायद पहले किसी ने नहीं किया था। सुनीत एक तरफ खड़े होकर अनुरोध करते हैं कि मुझे प्रव्रज्या (बौद्ध संघ में शामिल होने) की अनुमति दें। तब बुद्ध बहुत करुणा के साथ बोले, "आओ भिक्षु!" और इस तरह सुनीत की दीक्षा हुई।

सुनीत अन्य भिक्षुओं की तरह बुद्ध के साथ नहीं जाते हैं। वे अकेले जंगल में जाकर बुद्ध के वचनों पर ध्यान, विचार करते हैं और अन्त में अज्ञान के अन्धकार को खतम कर देते हैं। तब एक चमत्कार होता है। देवों के राजा इन्द्र और ब्रह्मा खुद सुनीत को प्रणाम करते हैं। और कहते हैं कि वह मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ हैं और सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त हैं। वे दक्षिणा पाने के अधिकारी हैं। दरअसल जातिवादी समाज में दक्षिणा पाने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को ही था, सड़कों पर झाड़ू लगाने वालों को नहीं। जब बुद्ध को यह पता लगता है, तो वे कहते हैं,

"तप, संयम और अपने पर नियंत्रण से ही कोई ब्राह्मण बनता है, यही ब्राह्मणों में उत्तम है।"

और आज?

यह तो थी
आज से ढाई हज़ार
साल पहले के एक
दलित की यात्रा।
एक सफाई कर्मचारी जो जातिवाद, गरीबी, भुखमरी और अपमान यानी हर प्रकार की असमानताओं का शिकार था, वह देवताओं से भी पूजनीय स्थिति पाता है। यह कहानी आज हमारे बीच कई सवाल छोड़ जाती है – क्या हमारे समाज में आज दलितों की दशा में कोई खास फर्क आया है? एक अकेले व्यक्ति सुनीत ने तो शायद बौद्ध भिक्षु बनकर जंगल में तपस्या करके आत्मसम्मान और मुक्ति पा ली। लेकिन पूरे दलित समुदाय को मुक्ति और सम्मान कैसे मिले? इसमें बाकी समाज का क्या दायित्व है? जब तक दलित सम्मान और स्वतंत्रता नहीं पाते हैं क्या तब तक बाकी लोग सम्मानित और स्वतंत्र माने जा सकते हैं?

यदि तुम सुनीत की पूरी कहानी थेरगाथा में पढ़ना चाहते हो तो थेरगाथा की 620 से 631 तक की पंक्तियों को पढ़ सकते हो। ये पंक्तियाँ तुम हमसे ईमेल या व्हाट्स ऐप पर भी मँगवा सकते हो।

ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई

nature conservation foundation
science for conservation

मिनी हेलीकॉप्टर

ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई के पंख कागज़ जितने पतले और पारदर्शी होते हैं। ये अपने चारों पंखों को एक साथ या अलग-अलग भी फड़फड़ा सकते हैं। इसी वजह से ये हवा में आसानी से मुड़ जाते हैं, मँडराते हैं। और तो और पीछे की ओर भी उड़ते हैं... बिल्कुल हेलीकॉप्टर की तरह।

इनकी बड़ी-बड़ी आँखें (जिनमें हज़ारों लैंस होते हैं) इन्हें चारों ओर देखने में मदद करती हैं, सिवाय पीछे की ओर छोड़कर। तीस किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से चलती हवा में झपट्टा मारते हुए भी ये खुद को बहुत अच्छी तरह नियंत्रित करते हैं। और उड़ान के बीच में ही छोटे कीटों को आसानी से अपना शिकार बना लेते हैं। इनकी उड़ान को देखकर इंजीनियर लोगों ने कुछ ऐसे विमान बनाए हैं जो इनकी नकल करते हैं।

डेम्सेलफ्लाई

ये उड़ने वाले जीवित छोटे ड्रैगन पिछले तीस करोड़ सालों से इस दुनिया में रह रहे हैं, यानी कि डायनासोर से भी पहले से!

ड्रैगनफ्लाई

इनमें फर्क कैसे करें

ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई दोनों नज़दीकी रिश्तेदार हैं। और दोनों ही तालाब और पोखरों के आसपास दिखाई देते हैं। तो तुम कैसे पता लगाओगे कि कौन ड्रैगनफ्लाई है और कौन डैम्सेलफ्लाई?

ड्रैगनफ्लाई की तुलना में डैम्सेलफ्लाई का शरीर पतला होता है। खास तौर से सिर का पिछला भाग जिससे पंख जुड़े होते हैं।

ड्रैगनफ्लाई की दोनों आँखें लगभग चिपकी हुई होती हैं। जबकि डैम्सेलफ्लाई की आँखें सिर के दोनों तरफ और दूर-दूर होती हैं।

ड्रैगनफ्लाई

डेम्सेलफ्लाई

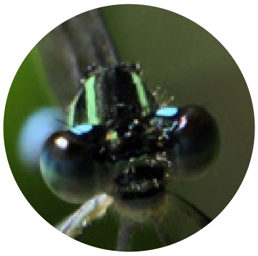

आराम के वक्त ड्रैगनफ्लाई अपने पंखों को खुले रहने देते हैं और शरीर से दूर ही रखते हैं। जबकि डैम्सेलफ्लाई अपने पंखों को बन्द करके अपनी पीठ पर रख लेते हैं।

डैम्सेलफ्लाई की तुलना में ड्रैगनफ्लाई लम्बी दूरी तक और ज़्यादा तेज़ उड़ते हैं।

विशेषज्ञ से मिलो

के. ए. सुब्रमण्यम पिछले पन्द्रह सालों से ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई का अध्ययन कर रहे हैं। आओ, उनसे पूछते हैं –

आपको ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई के बारे में सबसे ज़्यादा दिलचस्प बात क्या लगती है?

बचपन से ही मुझे इनकी हवाई करतबें देखने में मज़ा आता था। इनकी नज़रें बहुत ही तेज़ होती हैं और ये ऐसे विविध रंगों को देख पाते हैं जिन्हें हम नहीं देख सकते। हम ऐसे किसी और जीव को नहीं जानते जिसके पास इतनी जटिल आँखें हों।

ड्रैगनफ्लाई के झुण्ड भी हर साल प्रवास करते हैं। 'ग्लोब स्किमर' नामक इनकी एक प्रजाति तो भारत से पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका तक का सफर तय करती है। वहाँ पहुँचकर ये ड्रैगनफ्लाई प्रजनन करते हैं। और कुछ महीनों बाद इनके परपरपोते-पोती अण्डे देने वापस भारत आते हैं। कमाल की बात है ना?

ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई को कब और कहाँ ढूँढ़ा जाए?

भारत में डैम्सेलफ्लाई और ड्रैगनफ्लाई की 500 से भी ज़्यादा किस्में पाई जाती हैं। इनमें से ज़्यादातर बारिश (मानसून) के महीनों के दौरान प्रजनन करते हैं। मई से नवम्बर के बीच तुम इन्हें पोखरों, तालाबों, नदियों और पानी के टैंक के आसपास देख सकते हो। इनमें से कई शहरों में भी पानी की टंकियों के आसपास दिख जाएँगे।

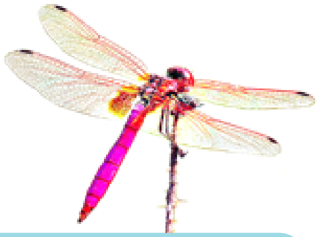

फील्ड डायरी के लिए

ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई को अपने अण्डे देने और बड़े होने तक बच्चों के रहने के लिए ताज़े पानी की ज़रूरत होती है। इसलिए ये तुम्हें पोखरों और तालाबों के आसपास दिख जाएँगे। तुम इन्हें नदियों, झीलों और तो और बारिश के पानी से भरे छोटे डबरों के किनारों पर भी आसानी से देख सकते हो।

गर्मी के किसी दिन अपने एक दोस्त को साथ लो। और पोखर, तालाब, पानी की टंकी या डबरे जैसी किसी जगह पर जाओ।

दोपहर के समय जाना क्योंकि तब ये ज़्यादा सक्रिय होते हैं। अगर धूप ज़्यादा हो तो टोपी पहनना मत भूलना और ज़्यादा चटक रंगों वाले कपड़े नहीं पहनना। इससे ये कीट परेशान हो सकते हैं।

जब तुम्हें कोई डैम्सेलफ्लाई या ड्रैगनफ्लाई दिखाई दे तो नोट करना कि:

- तुम्हें वो किस जगह मिले?
- उसके शरीर और पंखों के रंग व पैटर्न क्या थे?
- उसका आकार (अन्दाज़े से ही सही लिख लेना कि वो कितना बड़ा था) और आराम करते समय उनके पंखों की स्थिति क्या थी?
- 5 मिनट तक ध्यान-से देखना और लिखना कि वो क्या-क्या कर रहा है। उसके उड़ने का पैटर्न क्या है, वो ज़्यादातर समय क्या करता है।

प्रतियोगिता

अपने बनाए नोट्स हमें chakmak@eklavya.in पर भेजो और एक किताब जीतने का मौका पाओ। यह भी लिखना कि जब तुमने उन्हें देखा तब वे क्या कर रहे थे। तुम्हें कितने ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई दिखे। अगर तुम्हें ड्रैगनफ्लाई और डैम्सेलफ्लाई को पहचानने में कोई मदद चाहिए हो तो भी लिखना।

अनुवाद: मुदित श्रीवास्तव

2020 लॉकडाउन डायरी

प्रार्थना

चित्र: उबिता लीला उन्नी

ऑनलाइन क्लास में जो काम आ रहा था, कोमल उसे करती नहीं थी। इस वजह से काफी काम इकट्ठा हो गया था। एक दिन मैम का फोन आया कि कोमल वर्कशीट करके नहीं भेज रही है, भला क्या रीज़न है। क्या आप उसे फोन नहीं देते!

लॉकडाउन के पहले फिक्र रहती थी कि सुबह जल्दी उठना है, नहीं तो लेट हो जाऊँगी। फिर बैग टाँगकर ग्राउंड में चक्कर लगाने पड़ेंगे। इससे पैर तो दुखेंगे ही, बैग टाँगे-टाँगे कन्धे भी दुख जाएँगे। रात को ही अपना बैग अगले दिन के हिसाब से पैक करके रख लेती। अगर सोमवार है तो नीली ड्रेस, शनिवार है तो सफेद ड्रेस प्रेस करके टाँग देती ताकि सुबह ढूँढ़ने में परेशानी न हो। इससे टाइम बच रहता।

लॉकडाउन की शुरुआत में हमें जल्दी उठने की आदत थी। अब छह बजे उठकर स्कूल तो जाना नहीं होता था। इसलिए हम सब पार्क चले जाते। वहाँ जिम की मशीन लगी हुई हैं। छोटे भाई-बहन तो उन्हें झूला समझकर खेलते। कोमल रस्सी कूदती। सात बजे हम लोग घर लौट आते। नहाकर नाश्ता करते। फिर मम्मी खाना बना देतीं। दोपहर के टाइम कुछ करने को होता नहीं तो लोग बाग बाहर बैठकर गप-सर्राका करते जिससे उनका टाइम पास हो जाता।

हम लोग तो दोपहर के टाइम टीवी देखते और पाँच बजे तक देखते ही रहते। पाँच बजे मम्मी टीवी बन्द करवा देतीं और पढ़ने बिठा देतीं। कहतीं, “जब से लॉकडाउन लगा है तब से मेरे बच्चे किताबें लेकर बैठते भी नहीं हैं।” कभी-कभार मम्मी के ये डायलॉग हम पापा को बताते और जब हम हँसते तो मम्मी कहतीं क्या खुसर-फुसर चल रही है। फिर पापा कहते कि ऑनलाइन काम तो करते हैं ना। अब स्कूल बन्द हैं तो बच्चों को खेलने दिया करो। अभी से पढ़ाई का इतना बोझ मत डाला करो।

मम्मी रात के खाने की तैयारी करने लगतीं। खाने के बाद थोड़ी देर हमें आठ बजे तक नीचे खेलने दिया जाता। हम टायर को कमरे में घुमाते और गिनते कि कौन ज़्यादा देर तक घुमाएगा। मेरी दोस्त संगीता की मम्मी भी हमारे साथ खेलतीं और नए-नए खेल बतातीं। कोमल और उसकी मम्मी दोनों मोटे-मोटे हैं। इसलिए रात को वो हमारे साथ चिड़ी-छक्का खेलते और अक्सर कहते कि हमें अपने अन्दर अन्तर लग रहा है। हम बच्चे कहते कि आप पतले हो रहे हो। यह सुनकर सब लोग हँसने लगते।

लॉकडाउन में एक फायदा तो हुआ है कि घर में सभी को एक-दूसरे को जानने और अपने आपको टाइम देने का मौका मिला। हम सबको पता चला है कि घर में किसका नेचर कैसा है। किसको क्या पसन्द है। लेकिन एक साथ रहने से सबको टीवी भी साथ देखना पड़ता है। कोमल और उसकी मम्मी को नाटक देखने का शौक है और भाइयों को कार्टून। उसके पापा हमेशा न्यूज़ देखना पसन्द करते हैं। एक ही टीवी में कार्टून, नाटक, न्यूज़

सब तो देख नहीं सकते। पहले उसके पापा काम पर चले जाते थे और दोनों भाई स्कूल। तब कोमल स्कूल से आकर नाटक देखने लगती। थोड़ी देर बाद दोनों भाई आ जाते। फिर वो अपना प्रोग्राम देखते। कोमल और उसकी मम्मी खाने की तैयारी में लग जाते। रात को पापा आकर न्यूज़ देख लेते। रोज़ का यही रुटीन था।

लेकिन लॉकडाउन में रिमोट के पीछे बहन-भाइयों में लड़ाई हो जाती है। भाई अब दिन भर कार्टून देखते हैं। शाम के टाइम कोमल को घर के काम में मम्मी की मदद करनी होती है। इस कारण कोमल अब टीवी नहीं देख पाती है। और इसी बात के पीछे कोमल और उसके भाइयों की लड़ाई होती है। फिर मम्मी लड़ाई छुड़वातीं और कहतीं कि दिन भर तुम ही टीवी देखते रहते हो। कोमल मेरे साथ काम में मदद करती है। इसलिए उसे रिमोट दे दो और वह दोनों से रिमोट छीनकर उसे थमा देती हैं।

ऑनलाइन क्लास में जो काम आ रहा था, कोमल उसे करती नहीं थी। इस वजह से काफी काम इकट्ठा हो गया था। एक दिन मैम का फोन आया कि कोमल वर्कशीट करके नहीं भेज रही है, भला क्या रीज़न है। क्या आप उसे फोन नहीं देते! उसके पापा ने कहा, “मैम हम काम के लिए फोन देते हैं और यह नाटक देखने लग जाती है। इसलिए अब हमने फोन देना बन्द कर दिया है।” मैम ने कहा, “आप फोन दिया करो। अब काम करेगी। अगर नहीं करेगी तो मैं उसका नाम काट दूँगी।” मैम ने उसके पापा से कोमल से बात कराने को कहा।

उसके बाद कोमल ने अपने पापा से फोन देने के लिए कहा। पापा ने कहा कि अभी मुझे कहीं जाना है। बाद में ले लेना। शाम को कोमल ने फिर फोन माँगा तो पापा ने टाल दिया। कोमल के पापा बहुत गुस्से वाले हैं। इसलिए तीसरी बार बोलने की उसे हिम्मत नहीं हुई। एक-दो घण्टों बाद उसने फिर फोन माँगा। चौथी बार माँगने पर पापा ने फोन दिया। कोमल को पापा पर बहुत गुस्सा आ रहा था। लेकिन जब उन्होंने फोन दे दिया तो उसका गुस्सा शान्त हो रहा।

मैम ने चौबीस वर्कशीट करा दी थीं। कोमल ने आधी कर ली थीं। वर्कशीट करते-करते उसकी गर्दन और हाथ दुखने लगे तो उसने सोचा कि क्यों न कुछ देर नाटक देख लिया जाए। थोड़ी देर में छोटा भाई आया। उसके पैरों की आवाज़ सुनकर कोमल काम करने लगी। उसे काम करते देख भाई चला गया। कोमल ने सोचा अब काम कर लेती हूँ। लेकिन नाटक आधा-अधूरा रहने के कारण उसे पूरा देखने का मन भी था। उसने आधे घण्टे तक नाटक देखा। फिर मम्मी उसके लिए चाय लेकर आईं। मम्मी के कदमों की आवाज़ सुनकर उसने काम करना शुरू कर दिया। और मम्मी के जाते ही फिर नाटक देखने लगी। बड़े भाई को लगा कि कोमल काम नहीं कर रही है। इसलिए वह बिना आवाज़ किए कमरे में आया और फोन छीनकर मम्मी के पास ले गया। मम्मी से कहा, “देखो, तुम्हारी बेटी वूट पर नाटक देख रही थी।” मम्मी ने फोन लेकर अपने पास रख लिया।

कोमल ने सोचा किसी तरह मम्मी मुझे फोन दे देतीं तो मैं वर्कशीट मैम को भेज देतीं। मैम ने साफ शब्दों में कहा था कि काम नहीं भेजोगी तो तुम्हारा नाम स्कूल से कट जाएगा। यह सोचकर वह परेशान हो उठी। उसे बुरा लगा कि उसने खाली अपना काम ही नहीं किया, बल्कि मम्मी का भरोसा भी तोड़ दिया। फिर भी उसने हिम्मत करके मम्मी से फोन माँगा। मम्मी ने कहा कि स्कूल का काम नहीं कर रही है, तो बर्तन माँज। दोनों भाई अन्दर फोन चला रहे थे और वो बर्तन माँजते हुए तेज़ आवाज़ में गाना गाने लगी।

2020 में लगे लॉकडाउन के पहले गर्मियों में हम रात के बारह बजे तक बाहर बैठे रहते। आपस में गप्पें मारते। लेकिन अब शाम के समय मम्मी अपने साथ काम करवातीं। कभी भिण्डी बनाना सिखातीं, तो कभी पराठे बनाना। कभी-

कभार तो मैं मम्मी से कह देती कि मेरा मन नहीं कर रहा है। तुम्हीं कर लो अकेले। तब वो बड़े प्यार से कहतीं, “मेरी तबीयत खराब रहती है। कम से कम अपने भाइयों और पापा को खाना बनाकर दे तो देगी।” बस मम्मी की तबीयत के बारे में सोचकर मैं किचन में चली जाती। मम्मी अब मुझसे ही खाना बनवातीं ताकि मुझे जल्दी खाना बनाना आ जाए। और मम्मी का काम भी तो इससे जल्दी खतम हो जाता था।

लॉकडाउन में ही पापा ने घर बनवाने का काम भी लगवा दिया था। तब हमने अपने घर के बगल वाले घर को किराए पर ले लिया था। यह सोचकर कि आसपास रहेंगे तो रात में भी घर का ध्यान रख पाएँगे, क्योंकि ईंटें चुराने का डर लगा रहता है। जब मिस्त्री अंकल काम करते तो हम उनका काम देखते रहते कि वो दीवार किस तरह बना रहे हैं। पहले सीमेंट लगाया फिर कैसे उस पर ईंटें रखीं। धीरे-धीरे मिस्त्री अंकल हमारे दोस्त बन गए। वो काम करते रहते और हम उनसे बातें। कभी-कभार बेलदार पानी लेने गया होता तो हम उन्हें ईंटें भी पकड़ा देते। अब तो लगने लगा था कि यह बहुत आसान काम है और हम भी कर लेंगे।

इस तरह से पिछले लॉकडाउन से अब तक हमने खाना बनाने से लेकर घर बनाना तक सीखा। लेकिन सीखने की भी हद होती है। मन करता है कि स्कूल जाना शुरू हो, लोगों से मिलने-जुलने का मौका मिले। लगातार चलते रहने ही में मज़ा है।

प्रार्थना, सर्वोदय कन्या विद्यालय, खिचड़ीपुर दिल्ली में नौवीं कक्षा की छात्रा हैं।

अन्तर ढूँढ़ो

ये दोनों चित्र एक जैसे दिखते हैं, पर इनमें 9 अन्तर हैं। ज़रा ढूँढ़ो तो...

चॉकलेट के स्वाद की अन्दर की बात

चॉकलेट का शौकीन कौन नहीं है। लेकिन क्या तुम्हें मालूम है कि चॉकलेट में ये स्वाद कैसे आता है? ये स्वाद किण्वन (फर्मेन्टेशन) के कारण आता है, जिसे सूक्ष्मजीव अंजाम देते हैं।

चॉकलेट बनती कैसे है

चॉकलेट जिन बीजों से बनकर तैयार होती है उसके रग्बी फुटबॉलनुमा फल थियोब्रोमा ककाओ (Theobroma cacao) नामक पेड़ के तने पर लगते हैं। पेड़ों से तोड़कर इन चमकीले रंग के फलों को खोलकर अन्दर से उनका गूदा और बीज निकालकर अलग कर लिए जाते हैं। इन बीजों को बीन्स कहते हैं। इसके बाद उपचार के चरण में बीन्स को तीन से दस दिनों तक किण्वन के लिए छोड़ा जाता है। किण्वन होने के बाद इन्हें धूप में सुखाया जाता है और सूखे हुए बीन्स को भूना जाता है। इन्हें चीनी और कभी-कभी सूखे दूध के साथ इतना महीन होने तक पीसा जाता है कि मुँह में रखने पर दोनों के कण अलग-अलग महसूस न हों। इस रूप में आने के बाद यह मिश्रण चॉकलेट बार, चॉकलेट चिप्स या अन्य किसी भी रूप में चॉकलेट के उत्पाद बनाने के लिए तैयार होता है।

बैक्टीरिया बनाते हैं चॉकलेटी स्वाद

उपचार के चरण में बीन्स में कुदरती रूप से किण्वन होता है। वास्तव में चॉकलेट के स्वाद के लिए सैकड़ों तरह के यौगिक ज़िम्मेदार होते हैं। इनमें से कई यौगिक किण्वन की प्रक्रिया के दौरान ही बनते हैं और बेस्वाद बीन्स को चॉकलेटी स्वाद देते हैं।

ककाओ का किण्वन कई चरणों में होता है। किण्वन के लिए खमीर का उपयोग किया जाता है। इसमें कई बार बीयर और वाइन के किण्वन के लिए उपयोग किए जाने वाले खमीर का भी उपयोग किया जाता है। ककाओ के किण्वन के दौरान खमीर बीन्स से चिपके शर्करा पल्प को पचाकर एल्कोहल का निर्माण करते हैं। नतीजतन स्वाद प्रदान करने वाले एस्टर और फूल की खुशबू वाले एल्कोहल बनते हैं, जो ककाओ बीन्स द्वारा सोख लिए जाते हैं और अन्त तक चॉकलेट में मौजूद रहते हैं।

जब बीन्स से चिपका गूदा विघटित होने लगता है तो उसमें ऑक्सीजन प्रवेश करती है। ऑक्सीजन के प्रवेश करने पर वहाँ ऑक्सीजन-प्रेमी बैक्टीरिया की संख्या बढ़ने लगती है और खमीर की आबादी में कमी आने लगती है। इन ऑक्सीजन-प्रेमी बैक्टीरिया को एसिटिक एसिड बैक्टीरिया के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि ये खमीर द्वारा बनाए गए एल्कोहल को एसिटिक एसिड में परिवर्तित करते हैं।

बैक्टीरिया द्वारा बनाया गया यह एसिड भी बीन्स द्वारा सोख लिया जाता है, जो बीजों में जैव-रासायनिक परिवर्तन लाता है। इसकी वजह से वसा एकत्रित होने लगती है। कुछ एंज़ाइम प्रोटीन को छोटे-छोटे पेप्टाइड्स में तोड़ देते हैं, जो भुनने के दौरान 'चॉकलेटी' महक देते हैं। कुछ अन्य एंज़ाइम ऑक्सीकरण-रोधी पोलीफेनॉल, जिसके लिए चॉकलेट प्रसिद्ध है, को तोड़ देते हैं। नतीजतन, इसकी खासियत के विपरीत, अधिकांश चॉकलेट में बहुत कम पोलीफेनॉल्स होते हैं, किसी-किसी चॉकलेट में तो पोलीफेनॉल्स होते ही नहीं।

एसिटिक एसिड बैक्टीरिया द्वारा रोक दी गई प्रक्रियाओं के कारण चॉकलेट के स्वाद पर बड़ा असर पड़ता है। इन एसिड के कारण ही अत्यन्त कड़वे, गहरे बैंगनी रंग के पोलीफेनॉल अणु मद्धम स्वाद वाले, भूरे रंग के ओ-क्विनोन रसायन में बदलते हैं। और इसी जगह आकर ककाओ बीन्स कड़वे स्वाद से एक समृद्ध और चॉकलेटी स्वाद में आ जाते हैं। स्वाद के साथ-साथ रंग में भी परिवर्तन आता है और लाल-बैंगनी रंग के बीन्स भूरे रंग के हो जाते हैं, यानी चॉकलेट यहाँ अपना रंग पाती है। अन्त में, एसिड धीरे-धीरे वाष्पित हो जाते हैं और शर्करा उपयोग हो जाती है। फिर अन्य सूक्ष्मजीव जैसे कवक और बेसिलस बैक्टीरिया अपना काम शुरू करते हैं।

चॉकलेट बनने में सूक्ष्मजीव जितने अहम होते हैं, कभी-कभी वे चॉकलेट का उतना ही नाश भी कर डालते हैं। बेसिलस बैक्टीरिया की संख्या में अत्यधिक वृद्धि चॉकलेट को बासी और बेकार स्वाद देती है।

ककाओ के किण्वन के लिए किसान प्राकृतिक सूक्ष्मजीवों पर निर्भर होते हैं ताकि चॉकलेट को अपना अनूठा और स्थानीय स्वाद मिले। इसे 'टेरोइर' कहा जाता है: यानी किसी स्थान के कारण आने वाली विशेषता या स्वाद। ठीक अंगूर के किण्वन की तरह, ककाओ के मामले में भी स्थानीय सूक्ष्मजीव किसान के अपने अनूठे तरीके के साथ मिलकर चॉकलेट को स्थानीय विशेषता और भिन्न स्वाद प्रदान करते हैं।

यदि तुम चॉकलेट के इतने अलग-अलग स्वादों से महरूम हो तो कभी इनका भी आनन्द लेना। और हाँ सूक्ष्मजीवों की इस मेहनत की दाद देना मत भूलना।

(स्रोत फीचर्स)

अलिफ, बे, पे...

अरविन्द गुप्ता

चित्र: शुभम लखेरा

बचपन में महल्ले की संकरी गली में दो-चार पड़ोसी बच्चों के साथ बैट-बॉल, गिल्ली-डण्डा खेलना आदि ही मनोरंजन का एकमात्र तरीका था। सिनेमा के टिकट औकात से बाहर के थे। घर में कोई अखबार या पत्रिका नहीं आती थी। पर रेडियो और ट्रांजिस्टर पर फिल्मी गीत हमेशा बजते रहते थे। नतीजा यह हुआ कि मुझे उन गीतों में मज़ा आने लगा और उनके शब्द मुझे ज़बानी याद हो गए।

बाबूजी कभी स्कूल नहीं गए थे। बचपन में एक मौलवी साहब ने उन्हें घर पर ही आकर उर्दू सिखाई थी। बाबूजी उर्दू पढ़-लिख लेते थे। उनके पास एक टाइपराइटर भी था जिस पर वे अँग्रेज़ी में चिट्ठियाँ टाइप करते थे। मुझे जब भी मौका मिलता था मैं टाइपराइटर पर कोई पुराना कागज़ लगाकर अपना हाथ आज़माता था। पर बाबूजी को मेरी यह हरकत बिलकुल नापसन्द थी। उन्हें डर था कि कहीं मेरी ठोका-पीटी से टाइपराइटर खराब न हो जाए।

सिनेमा हॉल में घुसने में तो टिकट लगता था। पर उसके बाहर फिल्मी गानों की जो पतली किताबें बिकती थीं, उनकी कीमत सिर्फ 10 पैसे होती थी। इतने पैसे मेरी जेब में होते थे। इन किताबों में गानों के बोल बाईं तरफ हिन्दी में और दाईं तरफ उर्दू में लिखे होते थे। फिर एक दिन मैंने उर्दू का कायदा यानी वर्णमाला खरीदी। जल्द ही मैं अलिफ, बे, पे...... (उर्दू के अक्षर) सीख गया। और फिर कुछ ही दिनों में मैं धीरे-धीरे करके उर्दू में लिखे फिल्मी गानों को भी पढ़ने लगा।

शुरू में मैं अक्सर अटक जाता था। तब मैं बाईं ओर हिन्दी में लिखे बोलों को पढ़कर फिर उसे उर्दू में पढ़ने लगता था। इससे मुझे एक बात ज़रूर समझ में आई। अगर मैं उर्दू सीखने की शुरुआत ग्रामर से करता तो कहीं का नहीं रहता। पर क्योंकि मैंने अपने पसन्दीदा फिल्मी गीतों से शुरुआत की इसीलिए मैं इस खूबसूरत ज़ुबां को बहुत तेज़ी-से पढ़ना सीख पाया। तब से मैंने एक कसम खाई। कोई बात चाहे कितनी भी आध्यात्मिक हो, कितनी भी विद्वत्तापूर्ण हो, अगर वो उबाऊ हो तो मैं उससे कोसों दूर रहता हूँ।

बड़ों का बचपन

بازیچۂ اطفال ہے دنیا مرے آگے

بازیچۂ اطفال ہے دنیا مرے آگے
ہوتا ہے شب و روز تماشا مرے آگے

اک کھیل ہے اورنگ سلیماں میرے نزدیک
اک بات ہے اعجاز مسیحا مرے آگے

جز نام نہیں صورت عالم مجھے منظور
جز وہم نہیں ہستی اشیا مرے آگے

ہوتا ہے نہاں گرد میں صحرا مرے ہوتے
گھستا ہے جبیں خاک پہ دریا مرے آگے

مت پوچھ کہ کیا حال ہے میرا ترے پیچھے
تو دیکھ کہ کیا رنگ ہے تیرا مرے آگے

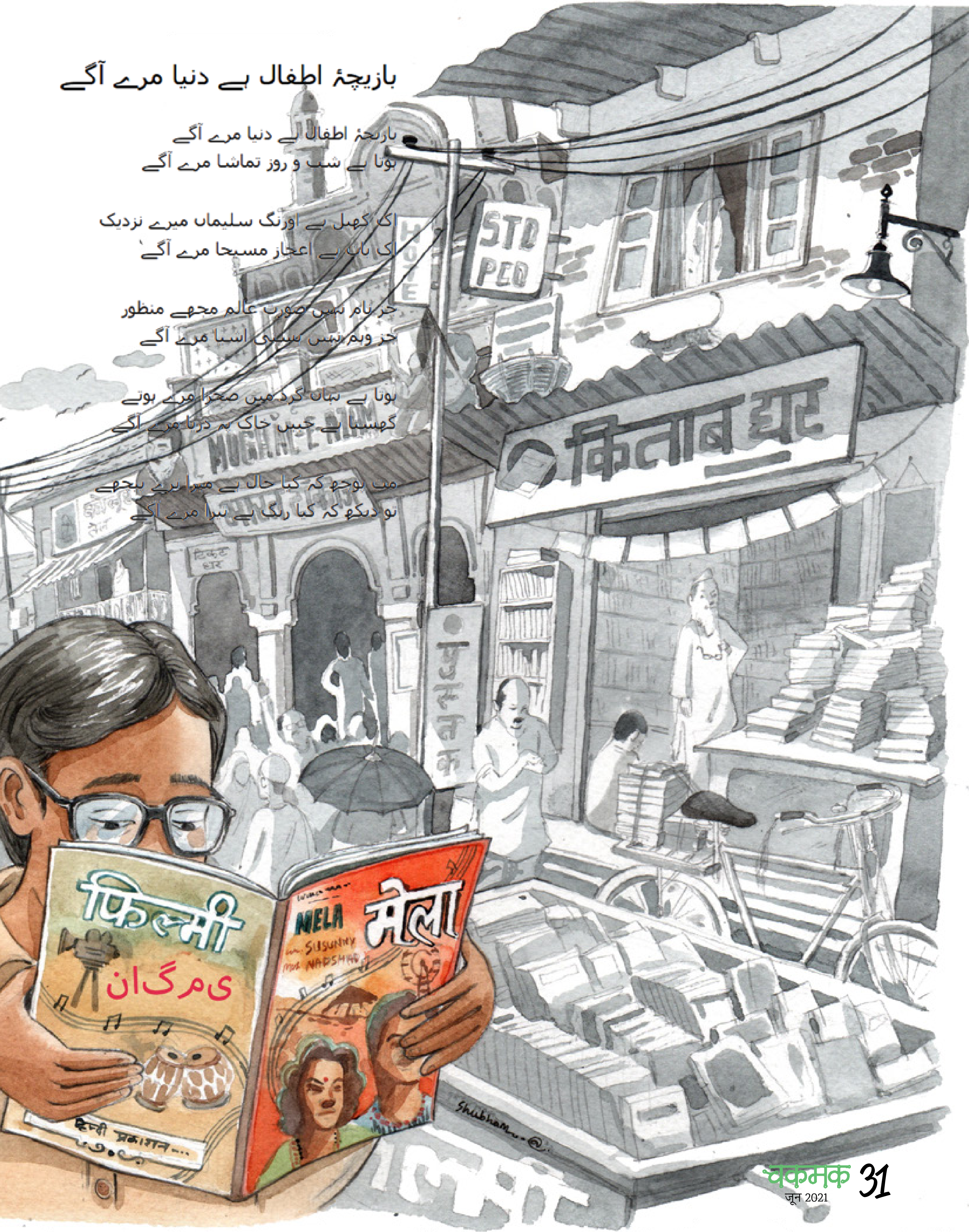

मेरा पन्ना

तोहफा

चित्र व लेख:
मोहम्मद असद, पहली, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मैं असद। अपना अनुभव बताता हूँ। मेरा छठवां जन्मदिन था। 13 अप्रैल को पापा मुझे तोहफे में साइकिल देने वाले थे। मगर कोरोना के चलते लॉकडाउन की वजह से दुकानें बन्द थीं। मुझे मेरी साइकिल नहीं मिली। केक भी नहीं मिला। मैं बहुत नाराज़ हुआ।

फिर 2021 में अपने सातवें जन्मदिन पर मैंने पापा से मेरा तोहफा लाने का वादा लिया। मैं अपने उस खास दिन का इन्तज़ार करके मन ही मन बहुत खुश होता हूँ। अब सिर्फ दस दिन का इन्तज़ार है।

मगर इस साल भी कोरोना की वजह से लॉकडाउन का सिलसिला जारी है। अब क्या जाने मुझे मेरा तोहफा मिलेगा या नहीं। खुश तो बहुत हूँ।

ईद के दिन मेहमानों को शीरखुर्मा देते हुए...

चित्र: आदिबा ताम्बोली, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

नज़ारा

अंकिता धुर्वे, सातवीं,
शासकीय उच्च विद्यालय
खापाभाट, छिन्दवाड़ा
मध्य प्रदेश

गर्मियों के दिन थे। गरम-गरम लू चल रही थी। लू के थपेड़े कभी मेरे गाल पर पड़ते जो टीचर के तमाचे का एहसास करा देते, तो कभी मेरे बालों को उड़ाकर बिखेर देते। मैं गाँव में अपनी नानी के घर आई थी। वहाँ पर दूर तक फसल कटे खेत नज़र आते थे। गर्मी की धूप में घने पेड़ों की छाँव बहुत मनमोहक लगती थी।

धीरे-धीरे सूरज ढल रहा था और शाम होने लगी थी। शाम की मन्द-मन्द हवा मन को सुहानी लग रही थी। फिर थोड़ी देर में चाँद निकल आया और चाँदनी सूखे खेत और हरे पेड़ों पर बिखर गई। मुझे यह नज़ारा बहुत सुखद लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि मैं हमेशा नानी के घर ही रहूँ। कभी शहर ही ना जाऊँ। लेकिन मुझे शहर जाना ही पड़ेगा। और मैं सोच में पड़ गई कि मुझे क्या करना चाहिए। शहर जाना चाहिए या नानी के घर ही रहना चाहिए।

मामा की मोमो पार्टी

चित्र व लेख:

सानिका भालोटिया, जलमोना
लिटिल एंजेल्स स्कूल,
कृष्णानगर, कपिलवस्तु, नेपाल

मेरा पन्ना

एक दिन एक दिन मामा हम लोगों को मोमो पार्टी के लिए ले जा रहे थे। मेरे बड़े मामा के बेटों का नाम छोटू और लड्डू है। मेरी छोटी बहन का नाम चिया है। रास्ते में कहीं पानी पड़ा था जिस पर छोटू का पैर फिसल गया। तब मुझे लगा कि हम लोग अब पार्टी में नहीं जा पाएँगे। लेकिन छोटू झट-से उठ गया और हम रेस्टोरेंट पहुँच गए।

मामा ने हम लोगों के लिए सूप मँगाया। सूप बहुत गरम था। सूप प्याली में था और उसके साथ एक बड़ी चम्मच भी थी। चम्मच से सूप पीने में बहुत मज़ा आ रहा था। छोटू और चिया बहुत बदमाशी कर रहे थे। वे वहाँ की सभी चीज़ें माँग रहे थे। तभी मामा ने मोमो मँगवाए।

मेरी माँ घर पर बढ़िया मोमो बनाती हैं। पर होटल में खाने का मज़ा ही कुछ और था। लड्डू ने काफी झूठा छोड़ दिया। मामा ने चलते-चलते मैजिक पॉप भी दिलवाया। मेरे मामा बहुत प्यारे हैं।

भूत

चित्र व कहानी: आयत, चार वर्ष, दिल्ली

यह भूत है। इसके दोनों हाथों में बच्चे हैं।
बच्चे चिल्ला रहे थे तो भूत ने पकड़ लिया।

चित्र की यह कहानी आयत ने अपनी अम्मी को बोलकर बताई थी।

चूहे का कमाल

स्वर्णदीप बामनिया, नौवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

कुछ दिन पहले हमारे घर में दो-तीन छोटे-छोटे चूहे आने लगे। एक बार मैंने सोचा कि क्यों ना इन्हें पकड़कर बाहर छोड़ दिया जाए। इसलिए हमने उन्हें पकड़ने के लिए एक जाल बिछाया।

हमने एक जगह पर रोटी रखी और उसके ऊपर टोकरी, और धागे से एक लकड़ी के टुकड़े को बाँध दिया। फिर उस लकड़ी से टोकरी को टिका दिया। लकड़ी जिस धागे से बँधी थी वह धागा मेरे हाथ में था। हम मोबाइल में वीडियो भी बना रहे थे।

हमने थोड़ा इन्तज़ार किया। फिर वहाँ चूहा आ गया। मैं बिलकुल तैयार ही था धागा खींचने के लिए। लेकिन हम उस चूहे को देखते ही रह गए और वह रोटी लेकर चला गया। बाद में वह वीडियो देखकर हम बार-बार हँस रहे थे।

शैतान बकरी

महक पटेल, तीसरी, शासकीय प्राथमिक शाला, धर्माश्री, सागर, मध्य प्रदेश

एक आदमी अकेला रहता था। उसकी एक दुकान थी। इतने में एक बकरी दुकान में घुस गई और सब्ज़ियाँ खाने लगीं। वह बकरी को भगाने लगा। पर बकरी ने दुकान फैला दी। दुकानदार ने सब्ज़ियाँ उठाकर दुकान जमा लीं। लेकिन उसकी दुकान पर कोई सब्ज़ी लेने नहीं आया। तो वो अपने सिर पर हाथ रखकर, उदास होकर बैठ गया।

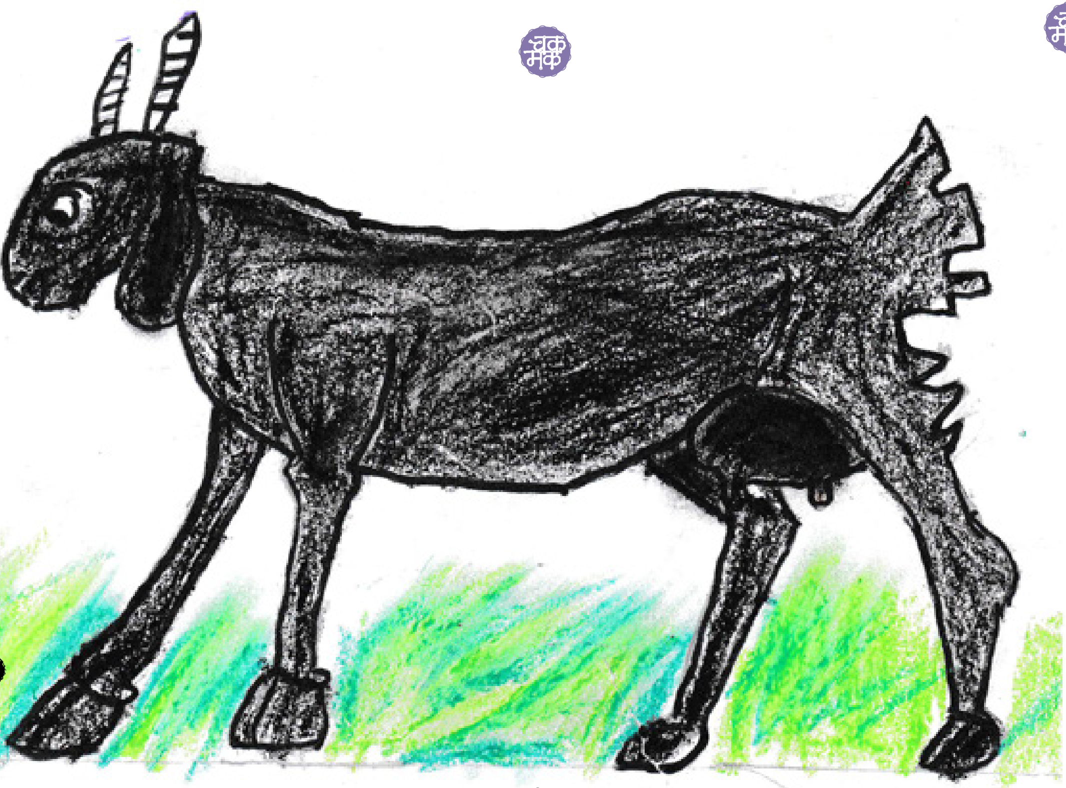

चित्र: अभय कुमार यादव, आठवीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

मेरा पन्ना

4. क्या तुम किसी भी और चिह्न का इस्तेमाल किए बिना इस समीकरण को सही कर सकते हो?

$$8+8 = 91$$

5. नीचे लिखे वाक्यों में कुछ फूलों के नाम छिपे हुए हैं। ढूँढ़कर बताओ।

1. वह राज़ सिर्फ बिरजू ही जानता था।
2. घपला शब्द सुनते ही अफसर के कान खड़े हो गए।
3. जिया ने इतना स्वादिष्ट गुलगुला बनाया कि क्या कहूँ।
4. दीपक चना रखकर पता नहीं कहाँ चला गया।
5. सपना को देखकर संकेत की आँखों में आँसू आ गए।
6. पलक ने रविवार को हमें खाने पर बुलाया है।

6. इस ग्रिड में कुछ ऐसी चीज़ें है जिन्हें ढूँढ़ते-ढूँढ़ते तुम्हारे मुँह में पानी न आए तो कहना...

तुम इन्हें बाएँ-दाएँ, ऊपर-नीचे, और आड़े-तिरछे भी ढूँढ़ सकते हो।

क	पे	ड़ा	ल	चा	न	छे	द
सी	बि	र	या	नी	ट	द	ही
ट	ज	डू	छो	र	झ	कू	ब
इ	जे	ले	बा	स	को	चा	ड़ा
नी	म	ई	बी	म	हे	र	ख
पा	ली	र	ज	ला	ह	जी	मा
नी	टा	म	ती	ई	बें	ल	छे
पू	आ	म	र	स	झ	दे	वा
री	डा	च	या	प	को	ड़ी	ट
द	क	बा	ब	ले	जा	हा	कू

फटाफट बताओ

उजली धरती, काला बीज
बड़े काम की है यह चीज़

(ज़गाक)

एक डिब्बे में बत्तीस दाने
बूझने वाले बड़े सयाने

(तँाद)

लालटेन ले पंखों में,
उड़े अँधेरी रात में
जलती बाती बिना तेल के,
ठण्ड और बरसात में

(नूगुज)

है पानी का मेरा चोला,
हूँ सफेद आलू-सा गोला
अगर उलट जो मुझको पाओ,
लाओ-लाओ कहते जाओ

(लाओ)

एक मुट्ठी राई,
जगह-जगह छितराई

(रेता)

क्या है जिसे माप तो सकते हैं,
पर देख नहीं सकते?

(यमस)

माथापच्ची

चित्र: स्मिता

हाथी और चिड़िया की बातें

श्रेया मिश्रा, चौथी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

एक जंगल था। बहुत हरा-भरा। उस जंगल के पास एक छोटी-सी, प्यारी-सी नदी बहती थी। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। जंगल में दो मोटे हाथी भी थे। एक दिन सुबह-सुबह उस जंगल में चिड़ियाँ चहकने लगीं। ऐसा लग रहा था कि सभी चिड़ियाँ मिलकर गाना गा रही थीं। दोनों हाथी घर से निकले और बोले, "चिड़िया रानी, सुबह-सुबह क्यों इतना चहक रही हो?" चिड़िया ने बोला, "देखो, हाथी राजा आज कितना अच्छा मौसम है और हमारा जंगल कितना प्यारा और सुन्दर लग रहा है।" हाथी चिड़िया की बात सुनकर बोले, "हाँ ये तो है चिड़िया रानी। ये तो बताओ इतने अच्छे मौसम में हम दोनों खाना क्या खाएँगे?" हाथी की बात सुनकर चिड़िया बोली, "वैसे ही तुम इतने मोटे हो, एक दिन तो भूखे भी रह ही सकते हो!" यह बोलकर चिड़िया चहकते हुए ऊपर आसमान में उड़ गई। और हाथी राजा चिड़िया की कही हुई बातें सोचने लगे। उन्होंने एक दिन खाना ना खाने का मन बनाया। तभी हाथी राजा को एक केले का पेड़ दिखा। फिर चिड़िया की बातें याद आईं। उन्होंने शाम तक अपने आप को रोका और रात होने तक केले पर टूट पड़े।

मई अंक में हमने यह चित्र दिया था। इस चित्र को देखकर बच्चों को अपनी कहानियाँ बुननी थीं। कई बच्चों ने अपनी कहानियाँ हमें भेजीं।

उनमें से कुछ कहानियाँ हम यहाँ दे रहे हैं। यदि तुम भी इस चित्र को देखकर कोई कहानी बुनो, तो हमें ज़रूर भेजना। चुनिन्दा कहानियों को हम अगले अंक में भी प्रकाशित करेंगे।

हाथी का बच्चा

हिबा फराज़ खान, तीसरी, 'जी', शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

एक जंगल में एक हाथी और उसका बच्चा रहते थे। वहाँ पर बहुत-से छोटे, बड़े जानवर भी रहते थे। सब एक-दूसरे की मदद करते। पर हाथी का बच्चा हमेशा सबको परेशान करता। उसकी माँ उसको हमेशा समझाती थी। मगर वो नहीं मानता था।

एक दिन वह जंगल में रास्ता भटक गया। जब वह वापस ना जा पाया तो रोने लगा। तभी वहाँ एक चिड़िया आई जिसे हाथी के बच्चे ने बहुत परेशान किया था। उसने पूछा, “तुम क्यों रो रहे हो?” हाथी के बच्चे ने कहा, “मैं रास्ता भटक गया हूँ। इस पर चिड़िया बोली, “तुम परेशान मत हो। मैं तुमको रास्ता बताती हूँ।” इस तरह हाथी अपनी माँ के पास पहुँच गया।

हाथी का बच्चा बोला, “धन्यवाद चिड़िया। मैंने तुमको बहुत परेशान किया। इसके लिए मैं माफी माँगता हूँ। आगे से मैं कभी किसी को परेशान नहीं करूँगा।”

सुन्दर दिन

हर्षिका आर्या, आठवीं, मंज़िल संस्था, दिल्ली

एक दिन सूरज बहुत अच्छा लग रहा था। मैंने चिड़िया देखी और कहा कि कितनी सुन्दर चिड़िया है। और मैंने हाथी भी देखा। और पानी में मछलियाँ तैर रही थीं। पत्तियाँ हिल रही थीं और तितलियाँ उड़ रही थीं।

तभी एक डाल टूटकर गिर पड़ी। वहाँ पर और लोग भी आए थे। वहाँ पर एक लड़की से मेरी दोस्ती हो गई। और हम दोनों ने साथ में जानवर देखें।

हमने देखा

शिवांश सिंह, दस वर्ष, मंज़िल संस्था, दिल्ली

एक दिन मैं और मेरे पापा जंगल में गए। हमने हाथी को देखा। हाथी के दाहिने पैर में चोट लगी थी। मेरे पापा ने हाथी के दाहिने पैर पर पट्‌टी कर दी।

उसी के पास तालाब में मछलियाँ तैर रही थीं। आगे चलकर हमने नारियल के पेड़ देखे। मेरा मन नारियल खाने को हुआ। पापा ने एक छोटे-से नारियल के पेड़ से दो नारियल तोड़े। फिर हमने नारियल पानी पिया और नारियल की मलाई खाई।

दिन के दो बज रहे थे। बहुत तेज़ धूप लग रही थी। हम एक पेड़ के नीचे बैठे आराम कर रहे थे। अचानक हमने देखा कि थोड़ी दूर एक पेड़ पर साँप लटका हुआ था। हम वहाँ से तुरन्त निकल गए। शाम होते-होते हमने घर के लिए पेड़ से सूखी लकड़ियाँ तोड़ीं। हमने लकड़ियों के दो गट्‌ठे बना लिए। साथ ही कुछ फल तोड़ लिए मम्मी और भाई-बहनों के लिए। और घर के लिए रवाना हो गए।

सुडोकू 43

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

		8	4	1	5	9	3	
1		9	2	3			4	
3			7				1	8
	4	5		6		3	2	1
	2			5				4
		7	3		2	8		9
7	9	2			4	5	6	
		6	5	2	9	1		
	8	1	6	7	3			

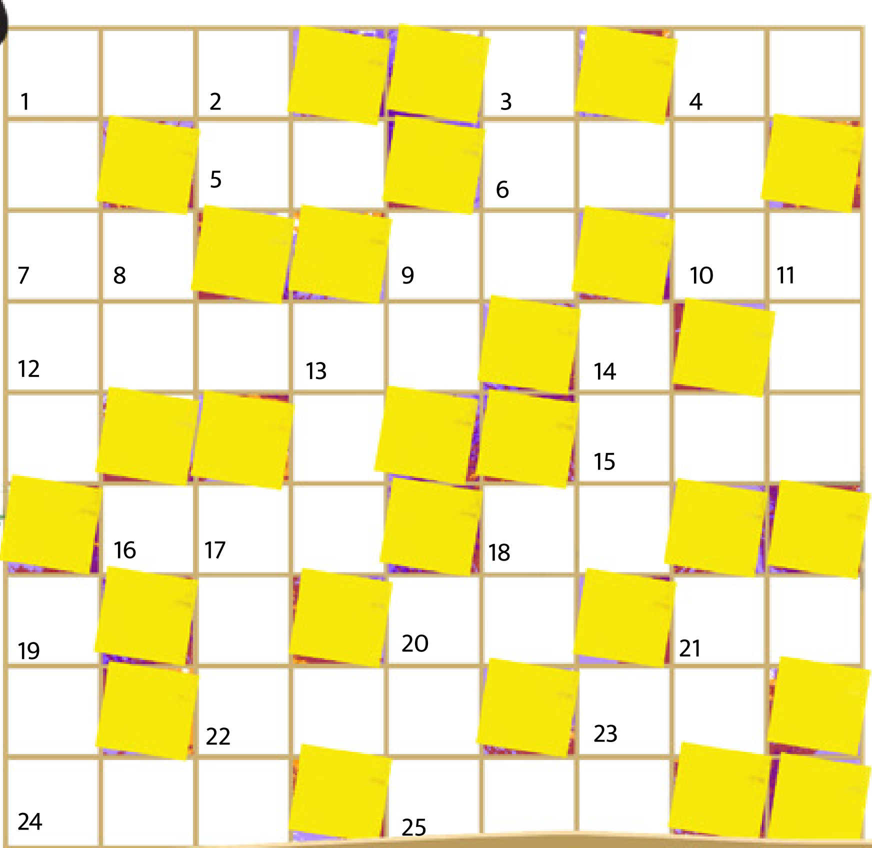
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25

14
20
6
15

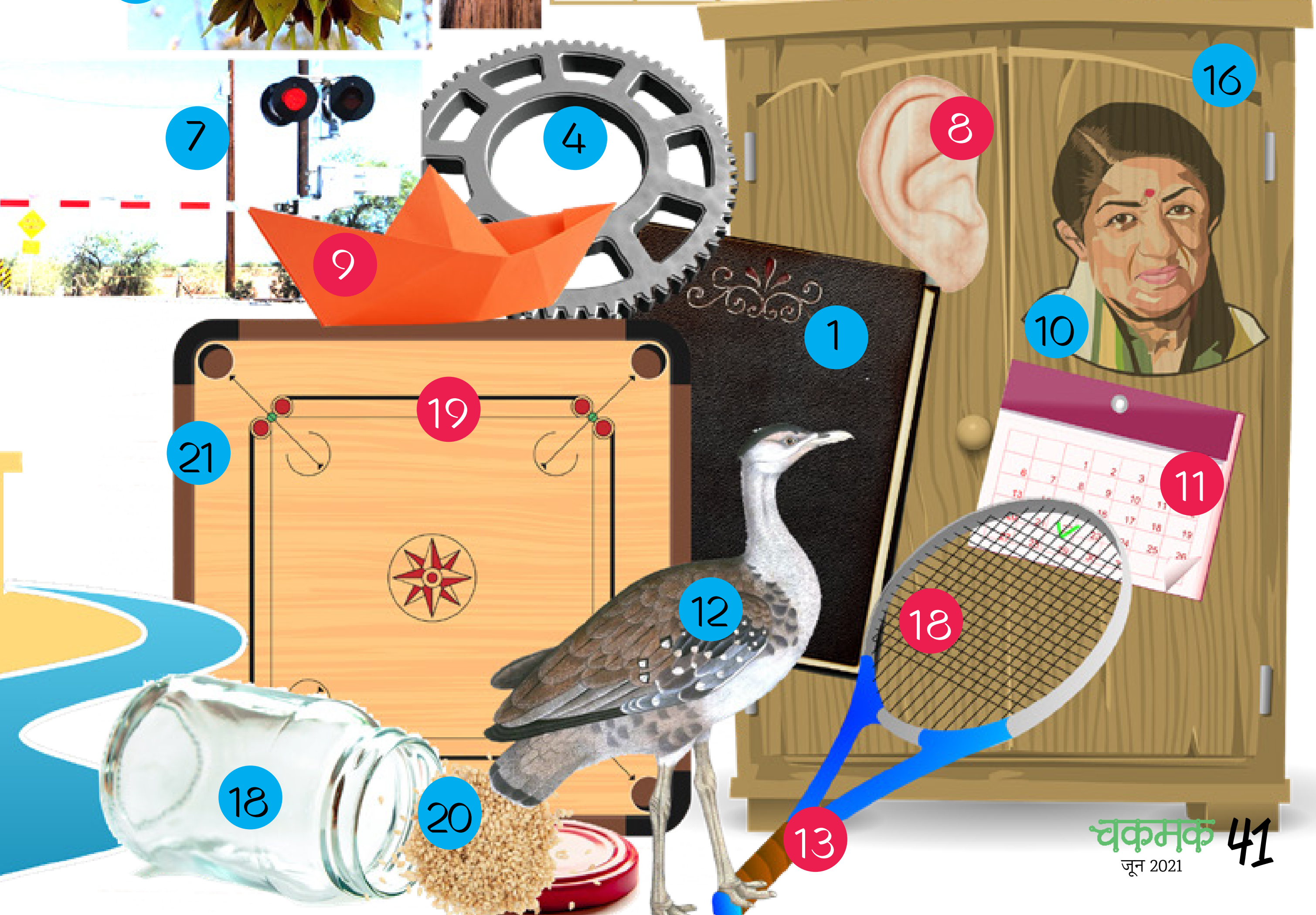
7
4
9
8
16
1
10
19
21
11
12
18
18
20
13

माथापच्ची जवाब

1.

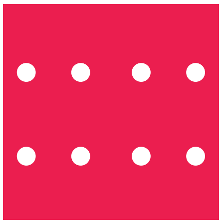

2.

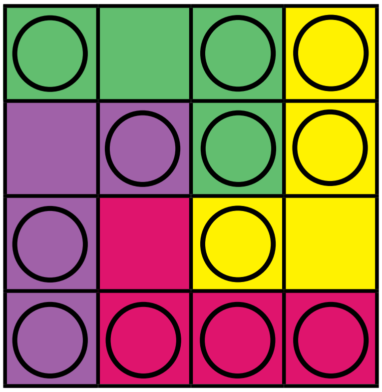

3. नैना और सैफ ने एकदम उलट बात कही है इसलिए दोनों में से किसी एक की ही बात सच हो सकती है। चूँकि तीनों में से सिर्फ एक ही सच बोल रहा है तो यह साफ है कि एलेक्स झूठ बोल रहा था। और इसी से पता चलता है कि नैना भी झूठ बोल रही थी। यानी कि लैपटॉप एलेक्स ने तोड़ा है।

4. 9 को उठाकर उलटा करके 1 के बगल में रख दो, तो
8 + 8 = 16 हो जाएगा।

5.
1. वह राज सिर्फ बिरजू ही जानता था।
2. घपला शब्द सुनते ही अफसर के कान खड़े हो गए।
3. जिया ने इतना स्वादिष्ट गुलगुला बनाया कि क्या कहूँ।
4. दीपक चना रखकर पता नहीं कहाँ चला गया।
5. सपना को देखकर संकेत की आँखों में आँसू आ गए।
6. पलक ने रविवार को हमें खाने पर बुलाया है।

6.

क	पे	ड़ा	ल	चा	न	छे	द
सी	बि	र	या	नी	ट	द	ही
ट	ज	डू	छो	र	झ	कू	ब
इ	जे	ले	बा	स	को	चा	ड़ा
नी	म	ई	बी	म	हे	र	ख
पा	ली	र	ल	ला	ह	जी	मा
नी	टा	म	ती	ई	बें	ल	छे
पू	आ	म	र	स	झ	दे	वा
री	डा	च	या	प	को	ड़ी	ट
द	क	बा	ब	ले	जा	हा	कू

मई की चित्रपहेली का जवाब

1 भों	2 पू			3 चौ	रा	4 हा		5 गा
	र		6 टं	की		7 र	8 ब	ड़ी
9 ड	ब	10 ल		11 दा	याँ		क्क	
म्प		12 क	ता	र		13 कू	ल	14 र
15 र	ब	ड़			16 घ	ड़ा		सी
		17 ब	टु	18 आ			19 ग	ला
20 धु		ग्घा		स्ती		21 आ	म	
22 आँ	च		23 मु	न	24 गा		25 ला	26 ख
		27 च	क्का		28 रा	स्ता		म्बा

सुडोकू-42 का जवाब

3	2	9	8	6	5	1	4	7
8	7	5	9	1	4	6	3	2
1	6	4	7	2	3	5	8	9
4	5	8	1	9	7	2	6	3
6	1	3	4	5	2	7	9	8
7	9	2	3	8	6	4	5	1
9	8	7	6	4	1	3	2	5
2	3	6	5	7	9	8	1	4
5	4	1	2	3	8	9	7	6

तबला टेबल

लेख व चित्र:
बीहू, दसवीं, भोपाल, मध्य प्रदेश

हमारे घर पर एक मेज़ है। माँ-बाबा कहते हैं कि वो मेज़ हमारे साथ तब से है जब मैं पैदा भी नहीं हुई थी। घर की कुछ पुरानी चीज़ों में से है वो।

वो मेज़ सामान्य नहीं है। आम तौर पर इस तरह की मेज़ मैंने और कहीं नहीं देखी। वो एक 3x4 फुट की कम ऊँचाई वाली मेज़ है, जिसे खाना खाने के लिए बनवाया गया था।

उस पर या तो ज़मीन पर बैठकर खाना खाया जा सकता था या फिर छोटे मूढ़ों पर बैठकर। उस मेज़ पर बैठा भी जा सकता है और हम लोग अक्सर उस पर अखबार फैलाकर भी पढ़ लिया करते। जब भी मेहमान आया करते, उस पर खाने के वक्त खाना रख दिया जाता। और बाद में जब गाना-बजाना होता तो पापा उसे तबले की तरह बजाया भी करते। इसलिए वो तबला टेबल थी।

एक-डेढ़ महीने पहले वो मेज़ रिटायर हो गई। उसकी जगह एक ऊँची कुर्सियों वाला बड़ा डाइनिंग टेबल आ गया है। उस पर बैठकर खाना तो खाया जा सकता है। पर उसे बजाया नहीं जा सकता है क्योंकि उस पर काँच लगे हैं।

पर वो पुरानी मेज़ जिसकी प्लाई कोनों से उखड़ने लगी है, जिसके पाए के कोनों में अभी भी थोड़ी दाल फँसी रह गई है। वो हमारे हॉल में रखी हुई है। अब उस पर बेशक खाना नहीं रखा जाता है। अब उस पर फूलदान रखा जाता है, जिसमें सफेद खुशबूदार रजनीगन्धा है। छोटे और खूबसूरत पौधों के गमले रखे हैं। वो अब भी किसी मेहमान के आने पर बजाई जाती है। वो अब भी तबला टेबल है।

मेरा पन्ना

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

आग लगी है पानी में

प्रभात

चित्र: नीलेश गहलोत

नल के नीचे पड़े रह गए
खाली सारे घड़े रह गए
माथा ठोका नानी ने
आग लगी है पानी में

पेड़ों में सूनापन है
खेतों में खालीपन है
काम नहीं है लोगों को
बस दिन भर ठालीपन है
सिर पीटा रमजानी ने
आग लगी है पानी में

जड़ सूखेंगी पेड़ों की
ऊन उड़ेगी भेड़ों की
मार पड़ेगी घर-घर में
लू से अलग थपेड़ों की
सूखे फूल कहानी में
आग लगी है पानी में

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन